चौधरी चरणसिंह गाँधीवादी विचारधारा से ओत प्रोत एक पक्के गाँधीवादी हैं। सम्भवतः यही कारण है कि जब तक कांग्रेस गांधी जी द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर चलती रही, तब तक वे उसमें रहे और कांग्रेस जब उस पथ से हटने लगी तो चौधरी साहब ने कांग्रेस को त्याग दिया। फिर उन्होंने उस पार्टी की ओर मुड़कर भी नहीं देखा। वे आगे बढ़ते रहे, बढ़ते गये। उन्होंने एक साधारण किसान के घर जन्म लिया था। साधारण जीवन, सादा जीवन ही उन्हें पसन्द है और साधारण मनुष्यों की पीड़ा को उन्होंने सदैव अपनी पीड़ा समझी। साधारण मनुष्य देश के लाखों गाँवों में बसता है और इसीलिए उनकी विचारधारा सदैव गाँवों के उत्थान पर केन्द्रित रही। अपना देश एक कृषि प्रधान देश है। कृषि की उन्नति के साथ-साथ ग्रामीण उद्योगों, कुटीर उद्योगों पर विशेष बल देना न्यायोचित ही है। जहाँ तक भारी उद्योगों का सवाल है, इसमें सन्देह नहीं कि इनके द्वारा जितना लाभ साधारण वर्ग को मिलना चाहिये था उतना विगत वर्षों में नहीं मिल पाया क्योंकि इनके कारण जन शक्ति का उपयोग नही हो पाया।

चौधरी साहब ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री पद को दो बार सुशोभित किया। पहली बार सन् १९६७ में जब कि उन्होंने कांग्रेस पार्टी को छोड़ दिया और संयुक्त विधायक दल का नेतृत्व किया। फिर दूसरी बार सन् १९७० में जबकि उन्होंने भारतीय क्रांति दल की स्थापना की और उसका नेतृत्व किया। इसके बाद उन्होंने स्वतन्त्र पार्टी और सोशलिस्ट पार्टी के सहयोग से भारतीय लोक दल की स्थापना की।

चौधरी साहब पर जहाँ महात्मागाँधी का अत्यधिक विशेष रूप से प्रभाव पड़ा, वहाँ वे स्वामी दयानन्द के आर्य समाज से भी प्रभावित हुए। यही कारण है कि वे सदैव जाति-पाँति के कट्टर विरोधी रहे हैं। उनके घर का खाना एक हरिजन बनाता था और सभी उसे सहज स्वीकारते थे।

श्री चरणसिंह एक स्पष्ट वक्ता और स्वतन्त्र विचार वाले व्यक्ति हैं। वे जिस विषय पर जो कुछ भी कहते हैं उसे निःसंकोच बेहिचक और निडर होकर कहते हैं, क्योंकि उनका मन और उनके विचार सदैव साफ रहते हैं। वे ऐसे व्यक्ति हैं जो पूर्ण रूप से यथार्थवादी हैं और जिस बात को करने का इरादा कर लेते हैं, फिर दृढ़ता से उसका पालन करते हैं, चाहे लोग उसका गलत अर्थ भले ही लगायें।

चौधरी साहब के चरित्रके विषय में यह विशेषता है कि कोई भी व्यक्ति उनके चरित्र की आलोचना नही कर सकता। ऐसा किसी डर या भय की वजह से नहीं बल्कि इसलिये कि किसी को उन पर उंगली उठाने का अवसर ही नहीं मिलता। चौधरी साहब अति साधारण, साहसपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। उन्हें किसी प्रकार का कोई लालच नहीं है। भ्रष्टाचार के वे कठोर विरोधी हैं। भ्रष्ट व्यक्ति के लिए उनके पास कुछ नहीं है। वे कानून को सर्वोपरि मानते हैं। कानून से बड़ा कोई नहीं है। हर व्यक्ति को नियम और अनुशासन का पालन करना चाहिए। यही उनके जीवन का एक मन्त्र है। यही कारण है कि चौधरी साहब की लगन, निष्ठा और अनुशासनप्रियता का लोहा सभी लोग मानते आये हैं।

विगत शासन में देश में अनाचार व भ्रष्टाचार पनपा, मंहगाई और बेरोजगारी की समस्या ने विकराल रूप धारण किया। सर्वहारा और पूँजीपति के बीच की खाई और बढ़ती गयी। इन समस्याओं के समाधान के लिए आज पुनः सरदार पटेल जैसे दृढ़प्रतिज्ञ व्यक्ति की आवश्यकता महसूस हो रही है, इस अभाव की चौधरी साहब ही पूर्ति हैं। आज अनेकों समस्याओं के समाधान के लिए तथा देश को उसकी खोयी हुई प्रतिष्ठा वापस दिलाकर उसे उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए चौधरी साहब के नेतृत्व की नितान्त आवश्यकता है।

हम उनकी दीर्घायु की कामना करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे शतायु हों और देश को उनका प्रेरणादायक नेतृत्व निरन्तर प्राप्त होता रहे ताकि गाँधी जी के सपनों के देश का निर्माण सफलता के साथ किया जा सके।

●

किसानों के मसीहा

□ प्रो० कैलाशनाथ सिंह
सदस्य, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश

चौधरी चरणसिंह का जन्म एक मध्यम वर्गीय किसान परिवार में हुआ। सादगी और सरलता उन्हें पैत्रिक सम्पत्ति के रूप में मिली। बचपन से ही वे आर्यसमाज के उत्सवों में भाग लेते थे। फलस्वरूप स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का उनके जीवन पर गहरा असर पड़ा। कुछ दिनों तक वे आर्यसमाज गाजियाबाद के मन्त्रीपद पर रहकर समाज की सेवा करते रहे। देश की सेवा का मूलमन्त्र था—'इदं न मम' (मेरा कुछ भी नहीं)। सन् १९६७ में चौधरी साहब ने कांग्रेस छोड़ने के बाद जन-कांग्रेस की स्थापना की जिसे भारतीय क्रान्ति दल के रूप में संगठित किया और स्वयं उसके अखिल भारतीय अध्यक्ष हुए।

मैं, भारतीय क्रान्ति दल, वाराणसी शहर के महामन्त्री के रूप में उनके सम्पर्क में आया। फिर भारतीय क्रान्ति दल वाराणसी के अध्यक्ष, तत्पश्चात् भारतीय लोकदल के अध्यक्ष, और उत्तर प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य और अब जनता पार्टी के कार्यकारिणी सदस्य के रूप में विगत दस वर्षों से उनके सानिध्य में रहकर जो कुछ मैंने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में अनुभव किया वह निश्चय ही भावी-पीढ़ी के मार्ग-दर्शन का कार्य करेगा।

आर्यसमाज मद्य-निषेध, दहेज-उन्मूलन, जाति-पांति का भेद मिटाने, अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देने, स्वराज, स्वभाषा और स्ववेश-भूषा के लिए निरन्तर सौ वर्षों से संघर्ष कर रहा है। भारतीय क्रान्ति दल, भारतीय लोक-दल और अब जनता पार्टी में इन आर्य विचारों का पूर्ण समावेश चौधरी साहब के प्रयास से ही हुआ है। केन्द्र में भी जनता पार्टी की सरकार इन कार्यों को मूर्तरूप देने के लिए कृत-संकल्प है। सन् १९६९ में 'महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ शताब्दी समारोह' का उद्घाटन करते हुए चौधरी साहब ने कहा कि मूर्ति-पूजा एवं जन्मगत जाति-पांति हिन्दू धर्म के अधःपतन के कारण हैं। उन्होंने कहा कि जन्मगत जाति-पांति का भेदभाव नहीं मिटा तो हिन्दू-धर्म एवं जाति मिट जायेगी। स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में गुण कर्म एवं स्वभाव के आधार पर जातियों का विश्लेषण किया है—

'जन्मना जायते शूद्रः, संस्कारात् द्विज उच्यते'।

उन्होंने कहा—अधिकतर वे लोग हिन्दू-धर्म छोड़कर बाहर गये जिन्हें हमने धक्का देकर बाहर किया, वे अपनी इच्छा से बाहर नहीं गये। देश के विभाजन की आधी जिम्मेदारी मुस्लिम-लीग और जिन्ना पर है, वहीं आधी जिम्मेदारी यहाँ के हिन्दुओं की है जिन पर यहाँ के मुसल-मानों को भरोसा नहीं रह गया था कि उनके साथ न्याय होगा। हरिजनों का उदाहरण उनके सामने था। स्वामी दयानन्द ने सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति कर न केवल हिन्दू समाज बल्कि सारे हिन्दुस्तानियों को जगा दिया। असली क्रान्ति तो विचारों की क्रान्ति होती है। स्वामी दयानन्द की यह क्रान्ति राजनीतिक क्रान्तियों से बहुत बड़ी है। स्वराज्य, स्वदेशी, अस्पृश्यता-निवारण और मद्य-निषेध हमने स्वामी दयानन्द से सीखा है। सामाजिक

सुधार का काम राजनीतिक कामों से बहुत कठिन है ।

चौधरी साहब ने कहा—'राजनीति में फँसा रहने के बावजूद मैं आर्यसमाजी हूँ ।' एक आर्यसमाजी ने भारतीय क्रान्ति दल के अध्यक्ष माननीय चौधरी साहब द्वारा समारोह का उद्घाटन करने पर आपत्ति की थी। इसका उत्तर देते हुए माननीय चौधरी साहब ने कहाकि 'क्या आर्यसमाजी क्रान्ति दल का अध्यक्ष नहीं हो सकता ? कोई भी राजनीतिक विचार रखते हुए आर्यसमाज का उतना ही भक्त हो सकता है जितना किसी अन्य धर्म का। स्वामी दयानन्द का नाम लेकर अपनी जिह्वा को पवित्र करने का मुझे भी उतना ही अधिकार है जितना विश्व में किसी और को। मेरा यह अधिकार कोई छीन नहीं सकता।' यह सुनकर डी०ए०वी० कालेज, वाराणसी के विशाल प्रांगण में दो लाख से अधिक जनसमूह पांच मिनट तक तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत करता रहा। इसकी अध्यक्षता संसद सदस्य स्वर्गीय प्रकाशवीर शास्त्री ने की थी।

अक्टूबर सन् १९७४ में कानपुर के फूलबाग में आयोजित आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर लाखों आर्य नर-नारियों के बीच आर्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए माननीय चौधरी चरणसिंह जी ने कहा—'मेरा आर्यसमाज में विश्वास है। जब मैं पढ़ता था तभी से मैंने आर्यसमाज का कार्य करना प्रारम्भ किया था। राजनीति में फँसकर मैं यहाँ अपने को बोलने का अधिकारी नहीं समझता। सोचा था, राजनीति में आकर शान्ति मिलेगी और जनता को पवित्र करने का मौका मिलेगा, पर ऐसा नहीं हुआ। इच्छा होते हुए भी समयाभाव से मैं आर्यसमाज की सेवा न कर सका, इसका मुझे दुःख है।

केवल धार्मिक विचारों से काम नहीं चलेगा बल्कि सामाजिक धार्मिक विचारों में परिवर्तन करना पड़ेगा। क्योंकि हम नैतिक दृष्टि से पिछड़ गये हैं। जापान का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा—'जापान में लोग परिश्रमी हैं, गुणी हैं, पुरुषार्थी हैं। इन्हीं गुणों के कारण विश्व में अमेरिका रूस के बाद जापान का नाम अग्रगण्य है। वहाँ का कर्मचारी हम जैसा आलसी नहीं है। हम बैठकर खाना चाहते हैं, काम करके नहीं। यहाँ का आदमी ईमानदारी से काम नहीं करेगा।

अधिकांश हिन्दुओं का विश्वास है कि जगत मिथ्या है। जब जगत ही मिथ्या है तो कौन काम करे—संसार झूठा है, यहाँ से जाना है। जब जाना ही है, तो क्यों काम करें। जब काम करने पर भी मरना है और न करने पर भी मरना है, तो फिर काम क्यों किया जाय ?

अतः एक निष्ठावान आर्यसमाजी की तरह इन अन्धविश्वासों पर गहरा प्रहार कर ईमानदारी और परिश्रम से कार्य करना चाहिये।'

लोगों का ख्याल है कि परमात्मा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। अगर यही सत्य है तो किसान को हल चलाने की क्या ज़रूरत ? गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है—'कर्मण्येऽवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्।' हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं, पर फल भोगने में परतन्त्र हैं। हमें काम करना चाहिए, फल की इच्छा नहीं। लोग कहते हैं, जो किस्मत में लिखा है वही होगा। फिर क्यों कर्म किया जाये ? परीक्षा में असफल होने पर माँ कहती है इसके भाग्य में यही लिखा था। चौधरी साहब ने कहा—'आर्यसमाज ऐसी गलत मान्यताओं का विरोधी है और सत्य के आधार पर मनुष्यों को कार्य करने की प्रेरणा देता है। प्रारब्ध से पुरुषार्थ बड़ा है। यदि मनुष्य पुरुषार्थ करेगा तो वह भाग्य को बदल देगा। आर्यसमाज कहता है, पुरुषार्थ करो।'

चौधरी साहब ने अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहित किया और जाति-पांति तोड़ने के लिए इसे एक आवश्यक मुद्दा बताया। स्वयं अपने लड़के-लड़कियों की शादी दूसरी जातियों में करके अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

जनता पार्टी की सरकार ने भी अन्तर्जातीय विवाह करने पर सरकारी नौकरियों में प्राथमिकता देने का निर्णय किया है।

जब चौधरी साहब उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री थे तो उन्होंने पहले काशी, प्रयाग, अयोध्या, मथुरा आदि धार्मिक नगरों में पूर्ण नशाबन्दी लागू की थी और उत्तर प्रदेश में

मद्य-निषेध को काफी हद तक इससे बढ़ावा मिला और अब जनता पार्टी की नीतियों के अनुरूप प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई ने आगामी चार वर्षों में देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू करने की घोषणा की है।

आज भारत सरकार में आर्यसमाज के उच्च आदर्शों में विश्वास रखने वाले नेता भारत की किसी भी स्वातन्त्र्योत्तर सरकार की अपेक्षा अधिक हैं। समस्त आर्यों का यह दृढ़ विश्वास है कि अब आर्य आदर्शों के पालन और उपलब्धि में किसी प्रकार की ढील नहीं रहेगी, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों, मन्त्रियों तथा अधिकारियों को अपने कार्यकाल में शराब न छूने की प्रतिज्ञा कराना आर्य सिद्धान्तों की एक महत्तम उपलब्धि है।

'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी दयानन्द ने स्वतन्त्रता के विषय में लिखा है कि अपना बुरा शासन भी अच्छा है। पराया अच्छे से अच्छा शासन भी बुरा ही है। वे स्वतन्त्रता के मूल्यों को भलीभाँति जानते थे। महर्षि दयानन्द भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम मन्त्रदृष्टा थे। इसी को ध्यान में रखकर माननीय चौधरी चरणसिंह अंग्रेजों से भारत को मुक्त कराने के लिए स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े थे।

चौधरी साहब लौहपुरुष हैं। उनके विचारों में दृढ़ता है और जो कहते हैं, उसे करके दिखाते हैं। वे स्वच्छ एवं कुशल प्रशासन के हिमायती हैं। उन्हें यदि किसानों का मसीहा कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। वे जन-नेता हैं, जन-नायक हैं। सरदार पटेल के बाद देश को बड़े सौभाग्य से ऐसा गृहमन्त्री मिला है। देश की निगाहें उनकी ओर लगी हैं और सभी आशा भरी निगाहों से चौधरी साहब की ओर देख रहे हैं। उनका सिद्धान्त है—गाँवों की ओर चलो। जब तक गाँवों का विकास नहीं होगा, छोटे-छोटे कुटीर उद्योग-धन्धे नहीं चलाये जायेंगे तब तक किसान खुशहाल नहीं होंगे और दलितों, पीड़ितों और शोषितों को ऊपर नहीं उठाया जा सकेगा।

विगत ३० वर्षों के दौरान गरीबी और अमीरी में भेद बढ़ा है। राजनीति के गन्दे कीचड़ में फँसे राजनीतिज्ञ शासकों की कभी हिम्मत नहीं हुई कि वे देश की अर्थव्यवस्था को अपनी मुट्ठी में रखकर गरीबों का शोषण करने वाले पूँजीपतियों पर कोई हाथ उठायें। पर धन्य है महर्षि दयानन्द का निर्भीक एवं चट्टान की तरह अडिग शिष्य, जिसने देश के चार अरबपतियों को भी जेल के सीखचों में बन्द करने का संकल्प किया। चौधरी साहब की ही दृढ़ता है कि उन्होंने शाह आयोग का गठन कर, दुर्गा और भारत कही जाने वाली आपात्कालीन बर्बर अत्याचारों की जननी भूतपूर्व प्रधानमन्त्री को बेनकाब कर दिया।

महर्षि दयानन्द के बाद यदि किसी ने चौधरी साहब को प्रभावित किया तो वे हैं महात्मा गाँधी। उनके कक्ष में केवल दो ही तस्वीरें नजर आती हैं—एक महर्षि स्वामी दयानन्द की और दूसरी महात्मागाँधी की, जो उनके आदर्श-प्रेरणास्रोत हैं।

कानून और व्यवस्था-अनुपालन के हिमायती चौधरी साहब देश के सर्वश्रेष्ठ प्रशासकों की श्रेणी में अग्रगण्य हैं। धवल खादी के वस्त्रों से शोभायमान छरहरे स्वस्थ कान्तिमय शरीर पर कभी क्रोध की आभा नहीं परिलक्षित होती है, किन्तु जब कभी क्रोध की ज्वाला भड़कती है तो उसे भी इजहार करने का विलक्षण तरीका है। उदाहरणार्थ वाराणसी टाउन हाल की विशाल चुनाव सभा को सम्बोधित करते समय जब विरोधियों ने अत्यधिक उपद्रव कर सभा भंग करने की कोशिश की तो माननीय चौधरी साहब ने ललकारा था कि—'इन विरोध करने वालों को बता दो कि हमारी सभा को भंग करने की कोशिश व्यर्थ जायेगी। आदर्शों के धनी बन्दरघुड़कियों से भयभीत नहीं होते। सच्चाई का विरोध करने वाले स्वयं अपने लिए वह खाई खोद रहे हैं जो एक दिन उन्हीं के गौरव का विनाश करेगी।'

चौधरी साहब चिन्तक, विचारक, मनीषी और धुन के पक्के हैं, पर थोड़े जिद्दी भी हैं। उनके द्वारा बनाया गया जमींदारी उन्मूलन 'ऐक्ट' स्मरणीय रहेगा। सिद्धान्तों से उन्होंने समझौता करना नहीं सीखा है। हानि-लाभ, जीवन-मरण को बराबर समझकर चलना ही उनका परम कर्तव्य है।

देशहित में वह बड़ा से बड़ा त्याग और व्यक्तिगत नुक़सान सहने को तैयार रहते हैं। उदाहरणार्थ भा०क्रां०द० के

अखिल भारतीय नेता होने के बावजूद राष्ट्रहित में विभिन्न दलों के ध्रुवीकरण पर भा०क्रां०द० एवं भालोद के नाम और झंडे को भी बदलकर जनता पार्टी का गठन किया। उनका विश्वास है, देश की लोकतन्त्रात्मक प्रणाली में केवल दो या तीन दल होने चाहिए।

चौधरी साहब में अपार दूरदर्शिता है। आपात्कालीन स्थिति में जब मैं जेल में था तो तिहाड़ जेल से उन्होंने मुझे पत्र लिखा था कि, 'शीघ्र ही जेल में ही एक नयी पार्टी का गठन होगा। देश पर तानाशाही का छाया हुआ विकराल कुहासा लोकतन्त्र के सूरज के आते ही छट जायेगा।' कुछ ही दिनों में जनता पार्टी का गठन हुआ और जेल से लिखी गई उनकी बातें साकार रूप में परिणत हुईं।

चौधरी साहब मितभाषी हैं, हितभाषी हैं, लेकिन उसूलों के लिए फौलाद की तरह सख्त हैं।

चौधरी साहब का कहना है कि भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे की ओर चलता है। इसलिये उनका कहना है, भ्रष्टाचार दूर करने के लिए बड़े अधिकारियों से शुरूआत करनी चाहिए। सत्य एवं स्पष्टवादी चौधरी साहब स्पष्ट कहने में झिझकते नहीं हैं। अपनी चुनाव सभाओं में चौधरी साहब कहा करते थे कि—'यदि मेरी सरकार बनी तो सरकारी अधिकारी ९ बजकर ५९ मिनट पर दफ्तर की कुर्सी पर मौजूद मिलेगा'—चौधरी साहब की इन बातों के बावजूद सरकारी अधिकारियों ने इनका प्रबल समर्थन किया।

चौधरी साहब की सत्यवादिता, कर्मठता एवं महान् चारित्रिक गुणों का परिणाम मार्च, १९७७ के लोकसभा-चुनाव परिणाम हैं। उत्तरी भारत के जिन नौ राज्यों का संचालक चौधरी साहब को बनाया गया था, वहाँ से कांग्रेस का पूर्णतया सफाया हो गया। ऐसा अद्वितीय व्यक्तित्व और पुरुषार्थ किसी अन्य राष्ट्रीय नेता के सामर्थ्य का नहीं था। भा०क्रां०द० एवं भालोद के उद्देश्य और लक्ष्य में आर्यसमाज की स्पष्ट झलक मिलती थी।

यह दल ऐसे समाज की स्थापना में विश्वास करता है जो आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक अथवा जन्मगत जाति-पांति व अन्य प्रकार के भेदभाव पर आधारित शोषण से मुक्त हो तथा इन आदर्शों की पूर्ति के लिए उन सभी उपायों में विश्वास करता हो जो महात्मा गाँधी की शिक्षा या उनके दृष्टिकोण से प्रेरित हो।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि—

निन्दन्तु नीति निपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीस्समाविषतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरेवा,
न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदम् न धीराः।

ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसे कर्मठ, तपोनिष्ठ, सच्चरित्र ईमानदार, दृढ़प्रतिज्ञ, स्वच्छ एवं कुशल प्रशासन के हिमायती, वाणी एवं लेखनी के धनी, अप्रतिम वक्ता, राष्ट्रहित में सर्वस्व आहुति देने वाले माननीय चौधरी चरणसिंह को शतायु करे, ताकि वे अपने सत्कर्ममय जीवन के दीर्घकालिक अनुभवों का लाभ राष्ट्र को प्रगति के चरमोत्कर्ष पर पहुंचाने में प्रदान कर सकें।

सशक्त व्यक्तित्व

□ आचार्य रमेशचन्द्र
सम्पादक, आर्यमित्र

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व के लिए नवचेतना का दिव्य प्रकाश लेकर भारत की पवित्र भूमि में अवतरित हुए। वैदिक ज्ञान ज्योति से मण्डित ऋषिवर की वाणी ने भारत के मन मस्तिष्क को झकझोर दिया तथा प्राचीन रूढ़ियों, पौराणिक उपाख्यानों और अनर्गल मिथ्याचार को तिरोहित करके आर्यसमाज का नवसन्देश प्रसारित हुआ। भारत जागा, भारत के निकटवर्ती द्वीपों में तथा जिन देशों में भारतीय जाकर बस गए थे, सब में ऋषि का सन्देश एक प्रकाश की किरण लेकर पहुंचा और आर्यसमाज एक क्रांतिकारी संगठन के रूप में भारत में ब्रिटिश राज्य द्वारा घोषित किया गया। विदेशी शासन यह समझ गया था कि ऊपरी सतह में सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आन्दोलन लगने वाला आर्यसमाज वास्तव में भारत की आत्मा को प्रकाशित करने वाला एक शक्तिशाली आन्दोलन है तथा एक दिन यह भारत से ब्रिटिश सत्ता को फेंकने में सक्षम होगा। ऐसा हुआ भी और आगे चलकर कांग्रेस के संगठन में जिन शक्तियों और प्रतिभाओं ने कुछ कर दिखाया, उनमें से अधिकाँश की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा आर्यसमाज के वातावरण में हुई थी।

चौधरी चरणसिंह जी का भी प्रारम्भिक जीवन आर्य-समाज के परिसर से प्रारम्भ होता है। आर्यसमाज में देश भक्ति, राष्ट्रीयता, मातृभाषा उन्नति एवं जातीयता उन्मूलन के कुछ ऐसे तत्व हैं जो प्रत्येक क्रांतिदर्शी मस्तिष्क को आकर्षित और प्रभावित करते हैं। श्री चरणसिंह जी के साथ भी यही हुआ। गाजियाबाद में वकालत के कार्य के साथ ही आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता हुए तथा स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री बने। आर्य सिद्धान्तों के पोषक बने तथा उन्हें जीवन में क्रियात्मक रूप में भी अपनाया। जाती-यता का संकुचित दायरा उन्हें बाँध न सका और अपने परिवार के कतिपय सम्बन्ध जातीयता के संकुचित वातावरण की परिधि को तोड़कर किये। जीवन को ऋषिवर के सन्देश के अनुकूल ढाला ओर आज भी वे आर्य समाज के दृढ़व्रती हैं। किसी भी आर्यसमाज ने अपने उत्सव में बुलाया तो, यदि समय हुआ अवश्य गए तथा ऋषिवर के उपकारों का बखान किया। एक स्थल पर उन्होंने कहा था कि देश सेवा के क्षेत्र में आने के लिए आर्यसमाज मेरा प्रथम सोपान है।

महात्मा गांधी के भारतीय रंगमंच पर अवतरण के साथ ही राष्ट्रीय कांग्रेस में एक नया बल आया तथा आर्य समाज के सजग कार्यकर्त्ताओं का एक दल जो रणभेरी बजाकर देशप्रेम में मतवाला होकर झूम रहा था, आर्यसमाज में आ गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम गौरव के साथ लिया जा सकता है। उसी लहर में गाजियाबाद क्षेत्र के नवयुवक कार्यकर्त्ता श्री चरणसिंह जी भी थे तथा यह विशेषता रही कि आर्यसमाज के दीक्षित व्यक्ति जो कांग्रेस में आये, वह अपने मौलिक सिद्धान्तों पर कांग्रेस में रहते हुए भी दृढ़ रहे, जैसे राष्ट्रभाषा हिन्दी, गोरक्षा, भारतीय संस्कृति आदि विषयों पर अडिग रहे तथा गाँधी जी के हिन्दुस्तानी और नेहरू के रोमन लिपि के विचारों से संघर्ष करते रहे। श्री चरणसिंह जी के भी जीवन में उपर्युक्त तत्व पूर्ण रूप से दृढ़ रहे।

राजनीति में दृढ़ता और सत्यता दो ऐसी बातें हैं जो व्यक्तियों में कम मिलती हैं, परन्तु श्री चरणसिंह जी इसके अपवाद रहे। उन्होंने जिस तथ्य को स्वीकार किया, उस पर दृढ़ रहे तथा उनके विरोधियों तक ने स्वीकारा है कि जो निश्चय किया, उसका साहस के साथ अनुगमन करने का विलक्षण गुण आप में है। साथ ही अनुशासन आपको सदैव प्रिय रहा और सबने स्वीकार किया है कि उत्तर भारत से चौधरी जी के बराबर अनुशासनप्रिय नेता और कोई नहीं है और उनके मुख्यमंत्रित्वकाल में सारे प्रदेश में अनुशासन की अमिट रेखा सी खिंच गयी थी। प्रदेश में सर्वत्र सभी उनके अनुशासन के प्रशंसक हैं।

छपरौली क्षेत्र से आप उत्तर प्रदेश व्यवस्थापिका सभा के लिए निर्वाचित हुए और जब से विधान सभा में प्रवेश किया, निरन्तर सदस्य रहे। कई निर्वाचनों में विजयी हुये। पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी के रूप में प्रशासन के कार्य को प्रारम्भ किया और विभिन्न विभागों पर नियन्त्रण करते हुए मन्त्री पद पर और मुख्यमंत्री पद पर रहे। जहाँ भी रहे, जिस पद पर रहे, उस विभाग में सब सजग रहते थे कि सत्यता, कार्यनिष्ठा और अनुशासन में जरा भी ढील हुई तो वह अक्षम्य होगी। काग्रेस में रहे, वहाँ की रीति नीति में चाटुकारियों की संख्या में वृद्धि होने पर भारतीय लोक दल की संस्थापना की, जिसने आपके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में अपनी स्थिति दृढ़ की और अधिक संख्या में उसके विधायक विधान सभा में पहुंचे। अतः जिस दल को, जिस प्रस्ताव को और जिस विचार क्षेत्र को आपका संस्पर्श मिला, वह उजागर हुआ और क्रियाशील बना।

आपात्कालीन स्थिति में देश में सभी विरोधी नेताओं को जैसे कारागृह भेजा गया; वैसे ही श्री चरणसिंह को भी कारागृह में डेढ़ वर्ष से अधिक रक्खा गया। यह समय आपने विचार मन्थन और भावी राजनीति की रूपरेखा में व्यतीत किया और कारागृह से बाहर आते ही आप भाई मोरार जी के पास गये तथा दृढ़ स्वरों में कहा कि 'भारत में यदि मानवीय स्वातन्त्र्य को जीवित रखना है, तो सारे राजनीतिक दल अपना अस्तित्व समाप्त करके एक नवीन दल के रूप में उदित हों तभी इस स्वेच्छाचारी और मानवीय स्वातन्त्र्य के विनाशक प्रशासकीय दल से मुक्ति पाई जा सकती है।' श्री चरणसिंह जी का स्वप्न साकार हुआ। उन्हें जनतापार्टी के संगठन और उसे विजयी बनाने में बड़ा प्रयास करना पड़ा। हर्ष है कि आज भारत के स्वराष्ट्र मन्त्री पद पर रहकर आप मातृभूमि की सेवा कर रहे हैं। साथ ही अपने संकल्पों की पूर्ति की ओर बढ़ रहे हैं, जिनमें आपात् स्थिति के समय की जांच भी है– उन ज्यादतियों और अनाचारों की जिसे देश में लाखों नागरिकों ने झेला है।

श्री चरणसिंह भारतीय कृषि तथा उससे सम्बन्धित विषयों के विशेषज्ञ हैं। भू–राजस्व और तद्विषयक अन्य समस्याओं के आप कुशल जानकार हैं। इस विषय पर आपकी कतिपय उच्च कोटि की कृतियाँ भी हैं। इसी हेतु सारा भारत आपका जन्मदिवस 'किसान दिवस' के रूप में आयोजित करता है। 'आर्यमित्र' भी भारत के इस मेधा सम्पन्न चरित्र प्रधान नर-नायक का अभिनन्दन करता है और प्रभु से प्रार्थी है कि आप शतायु होते हुए देश की महती सेवा करें तथा ऋषिवर के जिन आदर्शों की छाप आप पर पड़ी है, वह सारे देश पर प्रतिबिम्बित हो। आपके विशेष गुण हैं सत्यता, नैतिकता, दृढ़ता, सिद्धान्त-प्रियता और अनुशासनबद्धता। यदि राष्ट्र इन गुणों को आत्म-सात कर ले, तो उत्कर्ष की ऊँची शिखा हमारे निकट हो जाये। आशा है, राष्ट्र अपने नेता का अनुवर्ती होगा।

निष्काम कर्मयोगी

□ रमाशंकर बाजपेयी

स्वतन्त्रताप्राप्ति के बाद लौह-पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल भारत के प्रथम गृह मन्त्री बने। उनके सामने देश के विभाजन से उत्पन्न विषय साम्प्रदायिक समस्यायें तथा ५२५ देशी रियासतों की जटिल समस्यायें अंग्रेज विरासत में छोड़ गये थे। अंग्रेज जानता था कि भारत इन समस्याओं का समाधान न कर पायेगा, उसकी आजादी खतरे में पड़ जायेगी तथा पुनः भारत में सत्ता स्थापित करने का उसे अवसर मिलेगा। हमारे तत्कालीन गृह मन्त्री ने सारी स्थितियों पर काबू पाया, सभी देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय करके संसार के सामने अपनी अद्वितीय कार्यकुशलता का परिचय दिया। वे राष्ट्र निर्माता के रूप में सदैव याद किये जायेंगे। सरदार पटेल से मिलता-जुलता व्यक्तित्व हमारे वर्तमान गृह मन्त्री चौधरी चरणसिंह का है। दिनाँक २४मार्च १९७७ को जनता पार्टी के नेतृत्व में बने प्रधान मन्त्री श्री मोरार जी भाई देसाई के मन्त्रिपरिषद में चौधरी साहब को गृह मन्त्री बनाया गया। सरदार पटेल की तरह आप भी किसान परिवार में जन्मे हैं और किसानों की भलाई के प्रति व कृषक सम्बन्धी कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन हेतु आपका सक्रिय सहयोग आगे-आगे झलकता है।

उत्तर प्रदेश के अति मामूली परिवार में जन्मे इस संघर्षशील व्यक्ति ने बड़े परिश्रम से अपने जीवन को ऊंची मंजिल तक पहुँचाने के लिए अनेकानेक कंटकाकीर्ण मार्गों को पार किया है। उन्होंने अपने व्यक्तित्व का निर्माण अनुदिन पलछिन तपरत रह कर किया है। उन्होंने साधना की है पर वरदान पाने की इच्छा कभी नहीं की। कानून की शिक्षा प्राप्त की व कांग्रेस पार्टी में शामिल होकर अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की। एक सच्चे उपासक की भांति कांग्रेस दल की सेवा की। अपनी निष्ठा व मूलभूत सिद्धांतों से कभी विरत न हुए। सन् १९३५ में अंग्रेजों द्वारा प्रान्तीय स्वराज्य लागू किये जाने पर प्रथम कांग्रेसी मन्त्रिमंडल में, जिसके मुख्य मन्त्री स्वनामधन्य पं० गोविन्द बल्लभ पन्त थे, आपने पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी के पद को सुशोभित किया। यह सर्वविदित है कि इस काल में आपने किसानों की समस्या पर विशेष ध्यान दिया, एक रूपरेखा तैयार की जिसने जमींदारी को समाप्त करने के गुरुतर कार्य में काफी मदद पहुँचायी। श्रद्धेय पंत जी के केन्द्रीय मन्त्रिपरिषद में चले जाने से प्रान्त की स्थिर राजनीति ने अंगड़ाइयाँ लेनी शुरू की। एक दूसरे को नीचा कर मुख्य मन्त्री बनने का खेल शुरू हुआ। चौधरी साहब तो गम्भीर एवं धीरजवान पुरुष हैं। सारा तमाशा देखते रहे और आखिर में दल की गलत नीतियों से परेशान होकर, कांग्रेस दल को त्याग कर, पहली बार वह ३ अप्रैल सन् १९६७ में प्रान्त के मुख्य मन्त्री बने। भारतीय क्रांति दल की स्थापना उन्होंने अक्टूबर सन् १९६८ में की तथा उसके अध्यक्ष बने। धीरे-धीरे दल का प्रान्तीय स्वरूप अखिल भारतीय स्वरूप में बदल गया। दल बदल की बीमारी व कांग्रेस की 'विपक्षी सरकार गिराओ' नीति के कारण आपको पद त्याग करना पड़ा। क्रांति दल की शक्ति बहुत बढ़ चुकी थी और द्वितीय बार १७ फरवरी सन् १९७० को चौधरी साहब कांग्रेस के सहयोग से फिर मुख्य मन्त्री बने। आपके शासन काल में बिना किसी 'अनुशासन पर्व' के जिस प्रकार

का सुदृढ़ शासन दृष्टिगत हुआ, वह एक नजीर है। छात्र आन्दोलन, हड़तालें, श्रमिक अशांति आदि कहीं कुछ भी न दिखाई दिया। कार्यालयों में उपस्थिति की पाबन्दी होने लगी। प्रान्त के लिए ही नहीं, देश के लिए प्रथम अवसर था जब स्वच्छ प्रशासन व भ्रष्टाचार समाप्ति हेतु चौधरी साहब ने प्रान्त के आई० ए० एस० अधिकारियों को भी नहीं बख्शा। उनके खिलाफ कार्यवाही की गई।

तत्कालीन सत्तारूढ़ प्रतिष्ठान की गलत आर्थिक नीतियों, शासन में बढ़ रहे भ्रष्टाचार, सुन्दर व लुभावने वायदों की भूल-भुलैयां से देश की जनता की हालत उत्तरोत्तर बिगड़ती जा रही थी। चारो तरफ असंतोष व्याप्त होने लगा। सरकार इनका समाधान करने में अपने को असमर्थ पा रही थी। भ्रष्ट अफसर, भ्रष्ट मन्त्रियों तथा निहित स्वार्थी पूंजीपति मिलकर जनता को लूटने में लग चुके थे। इन व्याप्त असंतोषों व घुटन की परिणति गुजरात छात्र आन्दोलन के रूप में प्रस्फुटित हुई। सारे देश का ध्यान इधर केन्द्रित हुआ। श्री मोरार जी भाई को आमरण अनशन करना पड़ा। सरकार को झुकना पड़ा। इसी के बाद लोकनायक जय प्रकाश के नेतृत्व में बिहार में 'समग्र क्रान्ति' का नारा बुलन्द हुआ। लोकनायक के अहिंसक आन्दोलन को लाठी व गोलियों से दबाने की कोशिश की गई। सरकार ने भी लोकनायक की इस चुनौती को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना दिया। लोकनायक से वार्ता करने से भी इन्कार कर दिया गया। सरकार के सलाहकारों ने इस आंदोलन को पूरा कुचल डालने की योजना तैयार की। कुछ विशेष परिस्थितियों के आ जाने तथा अपनी निरन्तर गिरती हुई प्रतिष्ठा को बचाने की गरज से २६ जून सन् १९७५ को सारे देश में आपात्स्थिति लागू करके लगभग दो लाख व्यक्तियों को बिना अपराध बताये, जेलों में ठूंस दिया गया। आतंक का राज्य लोकतन्त्र बचाने के नाम पर कायम कर दिया गया। नागरिक व शासन का सम्पर्क ही टूट गया। तानाशाही का तांडव जनवादी विचारों को पूरी तरह से अपने में समेटने में लग गया। शासनतन्त्र स्वार्थपरता व चाटुकारिता की धुरी पर घूमने लगा। राष्ट्र की प्रतिरोधात्मक शक्ति का ह्रास हो गया। भारत का नागरिक असहाय, बेबस, चुपचाप यह तमाशा देखने को मजबूर था। २६ जून सन् १९७५ को ही, आधी रात में ही, देश के वरिष्ठ नेताओं के साथ चौधरी साहब भी कैद कर लिये गये। किसी को यह भी पता न था कि आखिर वे कहाँ हैं! इस समय सहसा हमारा ध्यान उनकी सहधर्मिणी श्रीमती गायत्री देवी, भूतपूर्व एम० एल० ए० पर केन्द्रित हो जाता है, जिन्होंने सती साध्वी की भाँति अपने पति की पगडंडी पर अपना जीवन बिछाकर फूल खिलाये और जो बाधाओं का भार वहन करते हुए पति के लिए प्रोत्साहन का केन्द्रबिन्दु बनी रहीं।

ऐसे समय में भारतीय जनता मन ही मन एक ही विचार में लीन थी कि समय आये और वह इस अपमानजनक स्थिति से निजात पा सके। आम आदमी राष्ट्रीय सरकार की पुनः स्थापना, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक व्यवस्था को बदलने, शासन की निरंकुशता एवं भ्रष्टाचार के दलदल से उबरने की बातें सोचने में संलग्न था। धीरे-धीरे नेता रिहा किये जा रहे थे। मार्च १९७६ में चौधरी साहब भी रिहा कर दिये गये। रिहा होते ही आपातस्थिति की लटकती तलवार की धार पर इस निर्भीक मानव ने प्रान्त की विधान सभा में २३ मार्च सन् १९७६ को अपने चार घंटे के भाषण में तानाशाही की धज्जियाँ उड़ा कर रख दीं। सेन्सरशिप की कृपा से आपका यह ऐतिहासिक भाषण जनता के समक्ष न आ सका था। संयोग वश चुनाव की घोषणा हुई। जनता को तानाशाही व लोकतन्त्र दोनों में किसी एक को चुनने का मौका मिला।

किसी महान कार्य को पूरा करने में व्यक्ति विशेष की महत्त्वाकांक्षायें ही सर्वोपरि निर्णायक नहीं होतीं। कोई न कोई महान आदर्श ही उसे सफल बनाता है। जनता में शासन को बदलने की भावना होती जा रही थी। बिखरे हुए राजनीतिक दलों का एक सूत्र में, एक विचारधारा में संयुक्त होकर प्रयास करना जरूरी था। चौधरी साहब का क्रांतिदल सन् १९७१ में ही लोकदल के रूप में उभर कर सामने आ गया था, जिसके सर्वेसर्वा लौह पुरुष चौधरी चरणसिंह का 'जनता पार्टी' को अस्तित्व में लाने का प्रयास विशेष महत्त्व रखता है। बिखरे हुए दलों का एक सूत्र में पिरोने का आपका यह भागीरथ प्रयास सदैव याद किया जायेगा। चुनाव प्रचार में उनके भाषण, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का उद्बोधन, जनता के मौलिक अधिकारों की पुनः स्थापना के मुद्दे, उन्होंने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से जनता के सामने

रखे। जनता परिवर्तन के लिए बावली तो थी ही लेकिन चौधरी साहब के सारगर्भित भाषणों का उस पर काफी प्रभाव हुआ। उसने विश्वास के साथ, पूर्ण समर्थन के साथ, मतदान द्वारा तानाशाही को ध्वस्त कर दिया और आज़ादी प्राप्ति के बाद प्रथम बार गैर कांग्रेसी सरकार, जनता पार्टी की सरकार केन्द्र में सत्तारूढ़ हुई।

चौधरी साहब ने शासन-भार को संभालते ही सबसे प्रथम काम, शासन में व्याप्त भ्रष्टाचार को समाप्त करने पर बल दिया। उन्होंने बड़ी निर्भीकता से बड़े बड़े महारथियों के खिलाफ कार्यवाही शुरू की, जिससे देश को दुबारा 'अन्धकार युग' का सामना न करना पड़े। कितने ही 'जांच आयोग' कार्यरत हैं, जो कानून की परिधि में अपना काम कर रहे हैं। चौधरी साहब का कहना है कि कोई कितना भी बड़ा व्यक्ति क्यों न हो, अगर वह अपराधी पाया गया तो उसे माफ नहीं किया जायेगा। सीधा-साधा जीवन पार करने वाले, ऐश्वर्य की चकाचौंध से कोसों दूर, गाँधीवाद के पुजारी, चौधरी साहब कठोर प्रशासक व कोरे सुधारवादी ही नहीं हैं, बल्कि वे सच्चे अर्थों में आर्थिक व रचनात्मक कार्यों के हिमायती हैं। उनका ध्यान आर्थिक प्रगति पर सदैव लगा रहता है। शासक की नजर अगर राष्ट्र के विकास कार्यों पर नहीं रहती तो विकास प्रगति को स्पर्श नहीं कर पाता। उनकी दृष्टि में आर्थिक विकास का मूल आधार कृषि है। उनके विचार, उनके गहन अध्ययन व दूर दृष्टि को प्रतिबिम्बित करते हैं। जनता सरकार ने चौधरी साहब की आर्थिक नीति से सहमत होकर बजट का ४० प्रतिशत कृषि पर व्यय करने का निर्णय किया है।

इन पंक्तियों के लेखक को अपने जीवन की चौधरी साहब से सम्बन्धित एक अविस्मरणीय घटना का स्मरण बरबस हो आया। उसका बगैर वर्णन किये दिल को तसल्ली न प्राप्त हो सकेगी। चौधरी साहब कितने निडर, कितने कर्तव्यपरायण हैं, यह इस घटना से ही प्रकट हो जाता है। सन् १९३८ की बात है। मैं उस समय विधान सभा देखने किसी न किसी एम० एल० ए० से पास लेकर जाता था। मुझे विधान सभा की कार्यवाही देखने में बड़ा सुख मिलता था। एक दिन की बात है, लगभग दो बजे का समय होगा। मैं ऊपर की मँज़िल में जाने के लिए लिफ्ट की प्रतीक्षा कर रहा था। लिफ्ट नीचे आई। मैं लिफ्ट पर चढ़ा ही था कि बहुत मोटा ताजा अँग्रेज आया। लिफ्टमैन ने तपाक से उसे सलाम किया। इतने में ही उस अँग्रेज ने मुझे धक्का देकर कान पकड़ कर बाहर कर दिया। दैव संयोग से चौधरी साहब उसी लिफ्ट में जाने के लिए आ गये। मुझे रुँआसा देखकर उन्होंने मुझसे पूंछा, 'क्या बात है?' मैंने बताया कि इन साहब ने मुझे कान पकड़ कर बाहर कर दिया है। साहब (चीफ सेक्रेटरी) ने कहा, 'श्रीमान्जी, ये अवांछित लड़के ऐसे ही असेम्बली में घूमते हैं।' जवाब सुनकर तत्काल मैंने प्रवेश-पत्र चौधरी साहब को दे दिया। उन्होंने चीफ सेक्रेटरी महोदय को पास दिखाते हुए कहा, 'पास होते हुए यह लड़का अवांछित कैसे?' साहब ने माफी माँगी और चौधरी साहब मुझे लिफ्ट में साथ ले गये। ऐसे हैं हमारे गृहमन्त्री चौधरी चरणसिंह जी।

देश इस समय घनघोर संकट से गुजर रहा है। उसको ऐसे नाजुक दौर में तपे हुए कर्णधारों की आवश्यकता है। हमें खरे-खोटे की परख होनी चाहिए। कुछ हताश शक्तियां देश को वर्ग-संघर्ष की ओर ले जाने को आतुर हैं, चाहे देश आबाद रहे या बर्बाद हो। उन्हें सत्ता से प्यार है, देश से नहीं। अयोग्यों को अयोग्य कहकर, योग्यों की योग्यता की सराहना करके तथा योग्यों का सहयोग प्राप्त कर हमें उन्हीं के साथ देश की गौरव-गरिमा रखने तथा उसका निर्माण करने की जरूरत आ पड़ी है। तभी देश का कल्याण होगा। हमारा हताश मन, आशा व विश्वास की एक किरण से उत्फुल्ल हो उठता है जब हमारी दृष्टि चौधरी साहब पर पड़ती है। कोई भी पद इन्हें आज तक प्रभावित नहीं कर सका है। इनका निस्पृह चरित्र ही इनका एकमात्र धन है। स्वाभिमान एवं अखण्ड तपस्या से अभिसिंचित अपनी करनी व कथनी इनकी एकमात्र धरोहर है। देश को सुदृढ़ बनाने की प्रतिच्छवि इनके नेत्रों की आभा में तैरती रहती है। ऐसा निष्कलंक एवं सच्चरित्र व्यक्ति ही स्वतन्त्र भारत की भावना की रक्षा करने में समर्थ हो सकता है। आज की स्वार्थपूर्ण पंकिल दलबन्दी में हम भले ही उनको समझने में गलती करें, पर एक दिन अवश्य आयेगा जब हम इस निष्काम व्यक्ति पर श्रद्धा करेंगे और यथार्थ समादर कर अपने को सौभाग्यशाली समझेंगे। सचमुच हमें उन पर गर्व है।

इन्द्र धनुषी व्यक्तित्व

□ धर्मवीर प्रेमी, एडवोकेट

गृहमन्त्री चौधरी चरणसिंह मेरठ जिले के हैं और अनेक साहित्यिक, सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों के कारण उनका और मेरे पूज्य पिताजी स्वर्गीय श्री विशम्भरसहाय प्रेमी का निकट सम्पर्क दीर्घकाल तक रहा, इसलिए आज श्री चरणसिंह के व्यक्तित्व और उनकी विचारधारा के सम्बन्ध में कुछ लिखने का अवसर मुझे मिल पाया है।

१ अप्रैल सन् १९६७ को जब उत्तर प्रदेश में पिछले लगभग बीस वर्षों से चली आ रही कांग्रेसी सरकार का पतन हुआ, बरबस मेरा ध्यान उस ओर चला जाता है, क्योंकि आज के सन्दर्भ में वह घटना भी अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। आज केन्द्र में तीस वर्ष से चले आ रहे कांग्रेसी शासन का अन्त हुआ है और इसमें श्री चरणसिंह ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही है, उस समय भी उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को अपदस्थ करने की भूमिका श्री चरणसिंह ही की थी।

मार्च-अप्रैल सन् १९६७ के दिन उत्तर प्रदेश की राजनीति में भारी उथल-पुथल के दिन थे। मार्च सन् १९६७ के दूसरे सप्ताह में संयुक्त विधायक दल का गठन हो चुका था, यद्यपि श्री चरणसिंह उस समय तक कांग्रेस के साथ थे। प्रदेश के मन्त्रिमण्डल के गठन की स्थिति अनिश्चितता में पड़ी थी। राज्यपाल श्री विश्वनाथ दास ने प्रदेश के एडवोकेट-जनरल श्री कन्हैयालाल मिश्र को संवैधानिक मामलों में समय-समय पर परामर्श के लिए लखनऊ ही में बुलाया हुआ था।

कांग्रेस विधायक दल का नेता श्री चन्द्रभानु गुप्त को चुना जा चुका था और कांग्रेस, सदन में अपना स्पष्ट बहुमत होने का दावा कर रही थी। संयुक्त विधायक दल के प्रतिनिधि दोनों सदनों में मिलाकर अपने बहुमत का दावा कर रहे थे। अन्ततः १४ मार्च को श्री चन्द्रभानु गुप्त के नेतृत्व में कांग्रेस ने सरकार बनाई। दलीय स्थिति का अन्दाज़ इस बात से लग सकता है कि विधान सभा के अध्यक्ष के चुनाव में कांग्रेसी प्रत्याशी श्री जगदीशशरण अग्रवाल को २२६ मत और सभी विरोधी दलों के उम्मीदवार श्री गंगाराम तलवार को १८८ मत मिले थे।

दोनों सदनों की संयुक्त बैठक में राज्यपाल का भाषण आरम्भ होते ही विरोधी दल के नेता श्री रामचन्द्र विकल ने राज्यपाल द्वारा कांग्रेस को सरकार बनाने का निमन्त्रण देने के विरोध में सदन से 'वाक् आउट' किया।

राज्यपाल के भाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव का जब समय आया तो श्री चरणसिंह ने 'जन कांग्रेस' नाम से एक नए दल का गठन किया और कांग्रेस छोड़कर अपने १६ अन्य साथियों के साथ विपक्ष में मिलने की घोषणा की। उस समय की दलीय स्थिति का पता इससे लगेगा कि धन्यवाद प्रस्ताव पर विपक्ष द्वारा रखे गए संशोधन के पक्ष में २१५ और प्रस्ताव के पक्ष में १९८ मत आए। इस प्रकार से १अप्रैल १९६७ को श्री चन्द्रभानु गुप्त की कांग्रेस सरकार का पतन हुआ।

श्री चरणसिंह ने तब कहा था, "मैंने जन कांग्रेस का निर्माण इसलिए किया कि मैं महसूस करता हूँ कि कांग्रेस में रहकर मैं जनता के हितों को नहीं साध सकूंगा।

श्री चरणसिंह जी द्वारा तब कांग्रेस का साथ छोड़ जाने पर बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया हुई थी। श्रद्धेय पं० गोविन्द वल्लभ पंत के नेतृत्व में बने उत्तर प्रदेश के प्रथम कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल में श्री चरणसिंह पन्त जी के सभा-सचिव थे और उस समय से १९-२० वर्ष तक निरन्तर महत्त्वपूर्ण मन्त्रिपद सम्भालते रहे थे। कुछ लोगों ने श्री चरणसिंह जैसे वरिष्ठ कांग्रेसी द्वारा दल को छोड़कर विपक्ष का साथ दिए जाने को विश्वासघात तक कहकर उनकी आलोचना की थी।

अप्रैल सन् १९६७ में श्री चरणसिंह जी जब पहली बार मेरठ आए तो पत्रकारों के साथ सम्मिलित भेंट हुई। स्वर्गीय श्री प्रेमी जी तो 'पंचायती राज' सम्पादक के रूप में थे ही, मुझे दैनिक 'हिन्दुस्तान' के सम्वाददाता की हैसियत से मौजूद रहने का अवसर मिला था। उस समय प्रेमी जी के एक प्रश्न के उत्तर में श्री चरणसिंह ने कहा था–'यह फैसला मेरे जीवन का एक ऐतिहासिक मोड़ है।' जिन लोगों ने उस समय से अब तक की राजनीतिक गतिविधियों की तह में जाने का प्रयत्न किया है, वह यह स्वीकार करेंगे कि आपात्काल के सम्पूर्ण प्रतिबन्धों और दमनचक्र के बाद भी केन्द्र में से कांग्रेसी शासन को हटाने में दस वर्ष पूर्व की इस घटना का भी महत्त्वपूर्ण हाथ था।

उत्तर प्रदेश में सन् १९६७ का संविद मंत्रिमण्डल, मैं एक प्रकार से महत्त्वपूर्ण परीक्षण समझता हूं। उस समय संयुक्त विधायक दल में सम्मिलित विधायक कांग्रेस को हटाकर गैर-कांग्रेसी शासन प्रदेश में चलाने में दिलचस्पी रखते हुए भी अपने-अपने दल के हित साधन में ही लगे थे। जनसंघ से सम्बन्धित श्री रामप्रकाश राज्य के उप-मुख्यमंत्री बने थे। उस समय परस्पर शंकाओं ने संविद के मंत्रिमण्डल के भविष्य को अनिश्चित बना रखा था।

तब श्री चरणसिंह के सुझाव पर संयुक्त विधायक दल की एक समन्वय समिति का गठन किया गया था जिसके मन्त्री श्री उग्रसेन थे। श्री चरणसिंह ने तब कहा था कि 'राज्य में जैसी मिली-जुली सरकार काम कर रही है, वह एक नया परीक्षण है और जनता का हित और समृद्धि इस परीक्षण की सफलता के साथ जुड़े हैं।"

श्री चरणसिंह के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में बनी प्रथम गैर कांग्रेसी सरकार ने जनता को कर भार में राहत देने और प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार को दूर करके सही अर्थों में स्वच्छ, सक्षम और ईमानदार प्रशासन प्रदान करने का वचन दिया और इसके लिए श्री चरणसिंह ने जरूरी ठहराया कि सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं का अपना चरित्र भी सन्देह से परे होना चाहिए। उन्होंने संविद मन्त्रिमण्डल का यह कर्तव्य बताया कि जनता में विश्वास जमाया जाये ताकि उन्हें इन्साफ और उन्नति का समान अवसर मिले। वास्तव में सार्वजनिक जीवन और प्रशासन दोनों अंग्रेजी काल की अपेक्षा अधिक भ्रष्ट हो जाने का उन्हें गम था।

अपने 'पंचायती राज' के २१ मई सन् १९६७ के सम्पादकीय में स्वर्गीय श्री प्रेमी जी ने उस समय की स्थिति का मूल्यांकन इन शब्दों में किया था—

"यह निर्विवाद है कि श्री चरणसिंह दृढ़ता से कदम उठाने वाले एक कुशल शासक माने जाते हैं। भ्रष्टाचारी, निकम्मे और अयोग्य अधिकारी उनको कभी प्रिय नहीं रहे। श्री चरणसिंह के अनुसार प्रशासन तभी ठीक चल सकता है जब अफसर ईमानदारी और कर्तव्य-परायणता से काम करें।"

प्रशासन और सार्वजनिक जीवन दोनों में ईमानदारी और स्वच्छता के प्रति श्री चरणसिंह आज जो जोर दे रहे हैं आज से दस वर्ष पूर्व के उनके विचार इस सम्बन्ध में महत्व रखते हैं।

इस सम्बन्ध में दो बातों का विशेष उल्लेख करना चाहूंगा। उत्तर प्रदेश में न्यायपालिका को कार्यपालिका से पूरी तरह अलग करने के लिए प्रभावी कदम श्री चरणसिंह के मुख्य मन्त्रित्व में ही आरम्भ किए गए। इसके अतिरिक्त

अप्रैल सन् १९६७ में ही उन्होंने प्रदेश में अवैतनिक मैजिस्ट्रेटों की समाप्ति कर दी। संविद सरकार जब बनी तो कुछ घिसे-मंजे सरकारी अफसरों ने, जो यह सोच रहे थे कि यह सरकार बहुत दिन चलने वाली नहीं है, विकास विभाग की ग्राम सेविकाओं को जोर-आजमाई का साधन बनाया। प्रशासन के महिला वर्ग का चुनाव जन-सहानुभूति अपने साथ रखने के उद्देश्य से ही इस काम के लिए किया गया। मई सन् १९६७ में ग्राम सेविकाओं ने मुख्यमन्त्री श्री चरणसिंह की कोठी का 'घेराव' किया। तब श्री चरणसिंह ने कहा था कि उनकी सरकार घेराव के तरीके को बढ़ावा नहीं दे सकती। घेराव का मतलब है कानून को अपने हाथ में लेना। उन्होंने स्पष्ट किया—

"लोकतन्त्रीय देश में मैं 'सत्याग्रह' के विरुद्ध हूँ। ये तरीके 'सत्ता के विरुद्ध विद्रोह' के तरीके हैं। ऐसे तरीके उन्हीं देशों में न्यायोचित हैं, जहाँ संवैधानिक तरीकों से न्याय प्राप्त करने के सभी रास्ते बन्द हों।"

जातिवाद और श्री चरणसिंह

श्री चरणसिंह के व्यक्तित्व को जब हम परखने बैठते है तो उनका यह विचार मुख्य रूप से सामने आता है कि देश में से जातिवाद को समाप्त किया जाये। श्री चरणसिंह के उत्तर प्रदेश में बने सर्वप्रथम गैर-कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल के शुरू के निर्णयों में से एक प्रमुख निर्णय यह भी था कि शिक्षा संस्थाओं के नामों में इस प्रकार से परिवर्तन किया जाये कि उनसे जातिसूचक नाम हटा दिए जायें। तब यह निर्णय हुआ था कि ३० जून सन् १९६७ तक जो शिक्षा संस्थायें अपने नामों से जाति-सूचक शब्द नहीं हटाएंगी उन्हें सरकारी अनुदान नहीं मिलेगा। अनेक शिक्षा संस्थाओं के नामों से उस समय जाति सूचक शब्द हटाए गए। तथापि दो प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों—अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के नामों को लेकर इस समय भारी विवाद खड़ा हुआ।

उस समय स्वर्गीय प्रेमी जी ने इस योजना की पूर्ण सफलता में गहरा सन्देह व्यक्त करते हुए कहा था, 'अनेक शिक्षा संस्थाओं के जन्म और कुशल संचालन में किसी भी जाति-विशेष का उसके साथ जुड़ा होना कभी-कभी मुख्य बात होती है।' श्री प्रेमी जी ने सुझाव दिया था कि पुरानी संस्थाओं के जिनका गौरवपूर्ण इतिहास है, नाम बदलने पर जोर न दिया जाये और यह नियम भविष्य में बनाई जाने वाली शिक्षा संस्थाओं पर ही लागू किया जाये। तब श्री चरणसिंह ने केवल इतना कहा कि 'उनका यह प्रयास जन मानस को जातिवाद से हटाकर राष्ट्रीयता की ओर अग्रसर करने का प्रयास है।'

आर्थिक प्रश्नों पर श्री चरणसिंह

इस देश के गरीब और मेहनती किसान, कृषि-उपज को बढ़ावा देने के साथ-साथ ग्रामों में व्याप्त बेकारी और अर्द्ध-बेकारी दूर करने के सवाल आदि के विषय में निरन्तर चिन्तन में लगे श्री चरणसिंह के आर्थिक प्रश्नों पर निश्चित मत हैं। श्री जवाहरलाल नेहरू जैसे व्यक्ति द्वारा प्रस्तावित सामूहिक अथवा सहकारी योजना का उन्होंने खुलकर विरोध किया था। भारतीय किसान के मानस को पहचानने वाले श्री चरणसिंह ने तब कहा था कि 'भारत की धरती और यहाँ का किसान इस योजना को कभी स्वीकार नहीं करेंगे।'

श्री चरणसिंह सदैव से कृषि पर से जनसंख्या का भार कम करने और श्रम-बहुल कुटीर उद्योगों में यहाँ की विशाल जन-शक्ति को लगाकर देश के आर्थिक विकास के हामी रहे हैं। उन्होंने अनिवार्य क्षेत्रों को छोड़कर बाकी हर उद्योग में पूँजी-बहुल बड़े-बड़े कारखाने लगाये जाने का सदैव विरोध किया है। उनका कहना था कि यदि इस देश की ९० प्रतिशत जनसंख्या और खेती-योग्य सारी भूमि मिलकर भी देश को समृद्ध नहीं बना सकते हैं और विदेशों से ली गई पूँजी कभी भी देश की आर्थिक रीढ़ को मजबूत नहीं बना सकेगी। उन्होंने अनेक बार तत्कालीन नेताओं को कहा था कि जब तक देश खेती की दृष्टि से सम्पन्न नहीं होगा, औद्योगीकरण अस्वाभाविक है और कभी भी इस विशाल भू-खण्ड के आर्थिक उद्धार का साधन नहीं बन सकता।

४ नवम्बर सन् १९६७ को श्री चरणसिंह पश्चिम उत्तर प्रदेश वाणिज्य-मण्डल के वार्षिक अधिवेशन के लिए

मेरठ आये थे। उस समय उनसे विशेष भेंट और कुछ आर्थिक प्रश्नों पर वार्ता का अवसर मिला। मुख्य बात जो उस समय उन्होंने कही यही थी कि 'भारत जैसे बड़े देश में जहाँ आबादी अधिक होने के कारण बेकारी की भयानक समस्या है, जो चीज छोटे पैमाने पर बन सकती है उसके कारखाने नहीं बनने देने चाहिए।'

इसी अवसर पर देश की श्रम समस्या पर भी उन्होंने अपने विचार प्रकट किये। उनका कहना था कि कई विकसित देशों के श्रमिकों के मुकाबले में हमारे देश के श्रमिकों का वेतन काफी अधिक होते हुए भी वे कम उत्पादन करते हैं।

काले धन का सवाल

उस समय पत्रकारों से वार्ता में श्री चरणसिंह ने यह भी कहा था कि देश के अर्थ संकट को दूर करने के लिए काले धन को बाहर निकाला जाना और उसका देश की समृद्धि और प्रगति के कार्यों में प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है।

गन्ना सन् १९६७ में और सन् १९७७ में

अपने पुराने कागजों को देख रहा हूँ, तो एक संयोग सामने आ गया। सन् १९६७ में मद्रास, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश ने अपने यहाँ से गुड़ के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, ताकि वहाँ की चीनी मिलों को गन्ना मिल सके। इन राज्यों द्वारा गुड़ निर्यात पर प्रतिबन्ध लगा देने का परिणाम यह हुआ कि गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश और पश्चिम बंगाल में उत्तर प्रदेश के गुड़ की माँग बढ़ गई; चीनी मिलों को गन्ना मिलने में कठिनाई हुई और उन्होंने श्री चरणसिंह से माँग की कि वे भी उत्तर प्रदेश से गुड़ के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगायें अन्यथा चीनी मिलों को पिराई बन्द करनी होगी। तब श्री चरणसिंह ने कहा था कि चीनी मिलों ने पिछले कई वर्षों में अच्छा मुनाफा कमाया है। अब अगर इस उद्योग में एक-दो वर्षों तक घाटा होता है तो चीनी मिल-मालिकों को इसे बर्दाश्त कर लेना चाहिए।

आज परिस्थिति इस अर्थ में तो बदली हुई है कि गन्ने की अधिकता है और गुड़ के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाने के स्थान पर निर्यात के लिए नये-नये बाजार खोलने का सवाल सामने है, पर इस बात में समानता है कि आज फिर चीनी मिल-मालिक घाटे का नाम लेकर मिलों को जल्दी बन्द करने की धमकी दे रहे हैं। आज फिर चीनी उद्योग को यह बताया जाना आवश्यक हो गया है कि यदि धरती के पुत्रों को उनके श्रम का मूल्य दिया ही जाना है, तो एक वर्ष मिल-मालिकों को घाटा बर्दाश्त कर लेना चाहिए। सरकार ने अपना योगदान आज कर दिया है, गन्ना क्रय-कर में कमी करके लेवी चीनी का दाम बढ़ाकर सरकार ने उपभोक्ता से भी उसका अंशदान मांग लिया है।

स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाएं

मेरठ के मेडिकल कालेज के साथ भारत के लौह-पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की स्मृति को स्थायी बनाने वाले सरदार बल्लभ भाई पटेल चिकित्सालय का शिलान्यास श्री चरणसिंह ने ३१ अक्तूबर सन् १९६७ को किया था। उस समय 'सेवा धर्मः परम धर्मः' का मन्त्र इस मेडिकल कालेज के अध्यापकों और छात्रों में फूँकने का काम भारी इच्छा-शक्ति के धनी श्री चरणसिंह के जिम्मे आया। आधार-शिला रखे जाने के समय यज्ञ किया गया जिसमें श्री चरणसिंह जी ने यजमान के रूप में भाग लिया। इस यज्ञ को सम्पन्न कराने का भार मेरे ही उपर था।

इस अवसर पर प्रदेश के मुख्यमन्त्री के रूप में श्री चरण सिंह ने राज्य में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं के विस्तार की चर्चा विशेष रूप से की थी। उनका कहना था कि उनकी सरकार का लक्ष्य प्रत्येक कमिश्नरी में एक-एक मेडिकल कालेज की स्थापना का है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि राष्ट्र की जीवन-शक्ति के लिए आवश्यक है कि हमारे डाक्टर इस बात की निरन्तर खोज करें कि देश में उत्पन्न होने वाली कृषि की उपज एवं अन्य वनस्पतियों से किस प्रकार पौष्टिक भोजन प्राप्त किया जाये। चिकित्सा के साथ-साथ रोग निवारण के साधन जुटाये जाने पर विशेष रूप से बल दिया गया।

इस अवसर पर एक समस्या विशेष रूप से उठाई गई थी, जो आज के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण है। उनके सामने यह सवाल रखा गया कि मेडिकल कालेज के लिए पर्याप्त संख्या

में डाक्टर प्रोफेसर इस कारण नहीं मिल रहे हैं, क्योंकि उन्हें निजी प्रैक्टिस करने की अनुमति नहीं है। आज भी निजी प्रैक्टिस बन्द कर दिये जाने पर बहुत से डाक्टर-प्रोफेसर कालेजों को छोड़ने पर विचार करने लगे हैं। तब भी श्री चरणसिंह ने मेडिकल कालेजों के प्रोफेसरों के लिए अध्यापन कार्य अधिक महत्वपूर्ण बताया था और कहा था कि सरकारी डाक्टरों को निजी प्रैक्टिस का मोह त्यागना चाहिए।

हिन्दी में राष्ट्रीय जीवन की एकता के दर्शन

मेरा श्री चरणसिंह से सान्निध्य सन् १९४८ के दिसम्बर में हुए अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३६वें मेरठ अधिवेशन के अवसर पर हुआ था। उस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री चरणसिंह जी थे, और मेरे पिता जी, स्व० श्री विश्वश्भर सहाय प्रेमी, स्वागत मन्त्री थे। इस अवसर पर आयोजित एक परिषद, समाजशास्त्र परिषद, थी जिसके मन्त्री का भार मुझे दिया गया था।

तब मैंने पाया कि श्री चरणसिंह जी हिन्दी के अनन्य भक्त हैं और हिन्दी में राष्ट्रीय जीवन की एकता के दर्शन करते हैं। सन् १९४८ का समय वह था जब कुछ प्रदेशों की अपनी-अपनी विधान सभाएं, मुख्य रूप से संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध (वर्तमान उत्तर प्रदेश), बिहार तथा मध्य प्रदेश हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार कर चुकी थीं। राजस्थान अपने आज के स्वरूप में तब तक गठित नहीं हुआ था, परन्तु अधिकांश देशी राज्य हिन्दी के ही पक्षपाती थे। मुख्य समस्या भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने की थी।

हिन्दी के समर्थक उस समय मेरठ के इस ऐतिहासिक अधिवेशन की ओर दृष्टि लगाये हुए थे और मैंने यह पाया कि श्री चरणसिंह इस सम्मेलन को अनेक अन्य सम्मेलनों की भाँति केवल एक विचारधारा के लोगों के मिलने-जुलने का साधन-मात्र नहीं रखना चाहते थे, वरन् चाहते थे कि मेरठ से हिन्दी के लिए जो उद्घोष हो, उसमें सम्पूर्ण राष्ट्र के जन-मानस का समवेत स्वर सुनाई दे सके। उन्होंने तथा स्व० प्रेमीजी ने राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन से आग्रहपूर्वक कहा था कि अहिन्दी प्रदेशों के हिन्दी प्रेमियों का स्वर मिल जायेगा तो हिन्दी राज-भाषा के मार्ग पर बहुत आगे बढ़ जायेगी।

सम्मेलन की व्यवस्था के सम्बन्ध में श्री चरणसिंह अनेक बार मेरठ आये तथा स्वागत समिति के सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं से और मेरठ-वासियों से अनेक व्यक्तिगत भेटों में उन्होंने यही कहा कि यह निर्णायक अवसर है और ऐसे समय खड़ी बोली के जन्म स्थान मेरठ को अपनी भूमिका निबाहनी चाहिए।

इस विषय में एक बात का विशेष उल्लेख करना चाहूँगा। राजनीतिज्ञों का एक वर्ग पंडित जवाहरलाल नेहरू को प्रसन्न करने के लिए हिन्दी के स्थान में हिन्दुस्तानी को राजभाषा बनवाने के प्रयास में लगा था। इस लाबी ने मौलाना अब्दुल कलाम आजाद का सहारा ले रखा था और उनमें से कुछ का खयाल था कि हिन्दी और हिन्दुस्तानी के सवाल को इस तरह उलझा देंगे कि कोई निर्णय न हो पाये।

तब श्री चरणसिंह ने सम्मेलन के अधिवेशन से पूर्व ही यह कहा था कि 'हिन्दी देश की अन्तरात्मा के अनुकूल है। सुदूर दक्षिण से भी बद्रीनाथ के दर्शन करने वाला तीर्थयात्री मुख्य रूप से हिन्दी के माध्यम से ही सारे देश का भ्रमण कर लेता है।' उन्होंने यह भी कहा था कि 'हिन्दी के प्रश्न को धर्म अथवा सम्प्रदाय के साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिए।' श्री चरणसिंह ने इस अधिवेशन के लिए मेरठ और आसपास के अनेक प्रमुख मुस्लिम और ईसाई बन्धुओं का सहयोग भी प्राप्त किया था।

अधिवेशन में अपने स्वागत-भाषण में श्री चरणसिंह ने उन लोगों को आड़े हाथों लिया था, जो कहते थे कि हिन्दी वाले साम्प्रदायिकता भड़काते हैं। साम्प्रदायिकता का रंगीन चश्मा पहनकर हर सन्दर्भ को देखने वालों, पग-पग पर देश की हर समस्या को हिन्दू और मुस्लिम रंग में रंगकर पेश करने वालों से उन्होंने कहा था कि 'राष्ट्र का आधार केवल राजनीति नहीं हुआ करती, देश की भाषा और संस्कृति राष्ट्र को मूर्तरूप प्रदान करती है।' उनका तो मुस्लिम बन्धुओं को सदैव यह परामर्श रहा कि वह अपने आपको भारत राष्ट्र की जीवन-धारा के साथ आत्मसात् करें।

मेरे आदर्श

□ मनोहरलाल
संसद सदस्य

'मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं मनस्विनाम्'

मनस्वी व्यक्ति जो सोचते हैं वही वाणी से अभिव्यक्त करते हैं एवं वही उनके आचरण में भी दृष्टिगोचर होता हैं। वे जीते हैं तो किसी सिद्धांत के लिए, जोखिम उठाते हैं तो उसी सिद्धांत के लिए और उसी सिद्धांत की रक्षा एवं परिपालन के लिए पाञ्चभौतिक शरीर का परित्याग करके यश: शरीर धारण करते हैं। वह व्यक्ति अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सकता जिसका कोई अपना चरित्र नहीं होता। ठीक यही स्थिति राष्ट्र की भी होती है। जिस राष्ट्र की अपनी कोई संस्कृति नहीं, अपनी अभिव्यक्ति नहीं, शैली नहीं अपने सामाजिक मूल्य नहीं, अपनी राजनीतिक मान्यतायें नहीं, अपना जीवन-दर्शन नहीं एवं अपना पुनीत चरित्र नहीं, वह अधिक दिनों तक स्वकीय स्थिति को स्थिर नहीं रख सकता; भले ही भौगोलिक मानचित्र में एक भूखण्ड के रूप में उसका अस्तित्व बना रहे। राष्ट्रवादी महापुरुष अपने राष्ट्र की प्रतिक्षण समृद्धि एवं उसकी मौलिकता की रक्षा करते हुए निरन्तर आजीवन-युग साक्षेप मार्गदर्शन करते रहते हैं।

सच्चा जननेता स्वीकृत सिद्धांत एवं राष्ट्रीय मूल्यों का ज्ञान आम आदमी को कराते हुए उनकी रक्षा के लिए सदैव जागरूक रहता है। वास्तविक राजनीति का यही स्वरूप है। यह हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य रहा है कि यहाँ के लोग राजनीति को साधन बनाकर सुख-सुविधा को हासिल करने में संलग्न रहे हैं। उनका जीवन स्वीकृत लोक-तान्त्रिक मूल्य परक एवं सिद्धांत परक न होकर अवसर परक रहा है। जोड़-तोड़ की तिकड़म में जो जितना माहिर था, वह उतना ही बड़ा राजनेता माना जाता रहा था। यह समझ केवल अपरिपक्व विचार वाले आम आदमी की ही नहीं बल्कि कुछ विचार रखने वाले व्यक्तियों तक के मन में घर कर गई है। लोग मौका परस्त सियासत को ही असली राजनीति मान बैठे हैं, मानों जीवन के नैतिक मूल्यों का उससे किंचित भी सम्बन्ध नहीं।

अवसरवादी राजनीति बहुत दिनों तक नहीं चलती। एक न एक दिन ऐसे लोग बेनकाब हो जाते हैं। और हुआ भी यही। विगत तीस वर्षों से एक छत्र शासन तन्त्र पर कुण्डली मार कर बैठे हुए लोग उठाकर फेंक दिए गए।

आज भी देश में इनेगिने राजनीतिज्ञ हैं जिनकी राजनीति एवं जीवन-दर्शन नैतिक मूल्यों के सिद्धांत पर आधारित है। चौधरी चरण सिंह उनमें अग्रिम पंक्ति के जन नेता हैं। उनकी राजनीतिक समझ जितनी ही स्पष्ट है, विचारों में उतनी ही दृढ़ता है। चरित्र की पवित्रता एवं नैतिक बल की अतिरेकता के कारण स्पष्टवादिता उनके स्वभाव में बस गई है। मानवीय संवेदन शीलता एवं परदु:ख कातरता इतनी कि गरीबों की दशा पर रो पड़ते हैं, तो वहीं पर प्रशासनिक क्षमता, आदर्शजीवी दृढ़ता एवं ईमानदारी इतनी कि भ्रष्टाचारी आत्मीय व्यक्ति को भी कभी माफ नहीं करते। यही कारण है कि प्रतिगामी शक्तियों से लोहा लेते हुए, जीवन के अनेक उतार चढ़ाव का सामना करते हुए अपनी अस्मिता को कायम रखने में सफल हो सके हैं।

"लोकतान्त्रिक मूल्यों की पुनर्स्थापना, नागरिक स्वतंत्रता को बहाल करना, देश के सर्वाङ्गीण विकास के लिये कानून एवं दण्ड व्यवस्था को स्थापित करना, गांधी दर्शन के अनुरूप ही साध्य एवं साधन दोनों की पवित्रता, ग्रामीण अचलों में रह रहे करोड़ों लोगों को उनकी इच्छा तथा क्षमतानुसार विकास के अवसर सुलभ कराना, किसानों, खेतिहर मजदूरों, भूमिहीनों, ग्रामीय दस्तकारों एवं कमजोर वर्गों की सेवा के लिए उनका जीवन समर्पित है। उनके व्यक्तित्व में श्रेष्ठता के सभी गुण पाये जाते हैं जो मिलजुलकर उनके व्यक्तित्व को चुम्बकीय बनाते हैं और जिनके कारण जन-समूह उसकी ओर खिचता ही चला जाता है।

चौधरी साहब के प्रति मेरी यह धारणा, यह आकर्षण प्रारम्भ में तो उनके भाषणों और विचारों का सम्यक् अध्ययन कर लेने के कारण ही था, किन्तु जब मैंने अपने जीवन को राजनीतिक दिशा में ढालने का निश्चय किया तो चौधरी साहब के प्रति मेरे मन में श्रद्धा का भाव उदय हो गया। मैंने बड़े आदर के साथ उन्हें अपने आदर्श के रूप में ग्रहण किया और एकलव्यीय साधना में लग गया।

राजनीति में रुचि तो मुझे सन् १९५९ से ही थी जब मै क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर में स्नातक कक्षा का विद्यार्थी मात्र था और उन्हीं दिनों मैंने स्थानीय महापालिका का चुनाव जीवन में पहली बार लड़ा। उस चुनाव में मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई और मुझे विश्वास हो गया कि यह सब चौधरी साहब के सिद्धांतों पर चलने का फल है। मेरी इस चुनाव सफलता पर मेरे शुभ चिन्तकों, मित्रों और समर्थकों को मुझसे कहीं अधिक सुख का अनुभव हुआ और मैं निरन्तर इस प्रयास में जुटा रहा कि मुझमें मेरे क्षेत्र के मतदाताओं द्वारा जो गहरा विश्वास व्यक्त किया गया है; मैं पूरी तरह उस विश्वास के योग्य अपने को सिद्ध कर सकूँ। मैं जानता था कि जन सेवा का एक लम्बा रास्ता मेरे सामने खुला हुआ है और यह प्रारम्भिक सफलता मेरे सामने रास्ते पर कदम बढ़ाने के लिए, मुझे सक्रिय सेवा के लिये आमन्त्रित कर रही है। क्षेत्रीय मतदाताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर उनके सुख-दुख में हाथ बटाना मेरी दिनचर्या में शामिल हो गया। पता नहीं यह सब मैं कैसे कर पाया, पर आज जब अतीत पर दृष्टि डालता हूँ तो ऐसा लगता है कि यह सब चौधरी साहब के सिद्धान्तों पर चलकर जनसेवा करने के व्रत का ही प्रभाव है।

चौधरी साहब का व्यक्तित्व राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए ही बना है। अदम्य साहस एवं सिद्धान्तों के सामने कुछ भी त्यागने की प्राणवत्ता से पूरित उत्साह के कारण सन् १९६८ ई० में जब चौधरी साहब ने भारतीय क्रान्तिदल की स्थापना की तो इस नये दल के संगठन हेतु दौरा करते हुए वे कानपुर में जाजमऊ स्थित मेरे निवास पर पधारे। उन्हें मैं अपने घर में पाकर गद्गद हो उठा। एकलव्य से द्रोण गुरुदक्षिणा लेने नहीं बल्कि उसे वरदान देने आये थे। पहले ही प्रत्यक्ष संभाषण में उनके व्यक्तित्व का जादू मुझ पर छा गया। उन्होंने एक योग्य एवं शुभचिन्तक गुरु की भाँति इस नये दल में शामिल होने के लिए सलाह दी। मुझे विश्वास था कि इसके दूरगामी परिणाम अच्छे ही होंगे। अतः मैंने उन्हें हर प्रकार से श्रद्धामय सहयोग देने का संकल्प किया। ठीक दो मास पश्चात् चौधरी साहब पुनः मेरे यहाँ पधारे और मैंने अपने मित्रों सहित भारतीय क्रान्तिदल की सदस्यता ग्रहण कर ली। तबसे लेकर अब तक हम सभी सम्पूर्ण निष्ठा से एक सिपाही की भाँति चौधरी साहब से दिशा निर्देश प्राप्त करते हुए जनता जनार्दन की यथासम्भव सेवा में लगे हुए हैं।

सन् १९६९ में मुझे कानपुर छावनी क्षेत्र से विधानसभा हेतु चुनाव लड़ने का चौधरी साहब का निर्देश मिला। मेरे विरुद्ध कांग्रेस के एक अत्यन्त 'अजेय दुर्ग' माने जाने वाले महारथी खड़े थे। मैं भारतीय क्रान्तिदल के प्रत्याशी के रूप में लगभग ग्यारह हजार मतों से विजयी हुआ। वस्तुतः यह जीत भारतीय क्रान्तिदल की नीतियों की जीत थी और उसका सारा श्रेय चौधरी साहब की उस अद्भुत संगठनात्मक शक्ति को है, जिसका चमत्कार उन दिनों सम्पूर्ण प्रदेश में देखने को मिला था।

चौधरी साहब जब उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री हुए तो उनके मन्त्रिमण्डल में मुझे राज्यमन्त्री के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। इसके भंग होने के पश्चात् जब श्री त्रिभुवन नारायण सिंह मुख्यमन्त्री बने तो मुझे श्रम एवं सेवायोजन मन्त्रालय में सेवा करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

चौधरी साहब के कुशल निर्देशन में राजनीति में एक प्रकार से मेरा यह 'प्रशिक्षण-काल' था। कोई भी कठिनाई उपस्थित होने पर वे समस्या के हर पहलू को किसी सुयोग्य गुरु की भाँति हमें समझाते और उसके हल का उपाय ढूँढ़ निकालते थे। अपने कार्यकर्ताओं के प्रति उनका गहरा विश्वास, लगन और निष्ठा से अपने उत्तरदायित्वों के प्रति कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते रहने की उनकी क्षमता, चरित्र और आचरण की दृढ़ता पर उनका विशेष बल, सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और स्वच्छता के प्रति उनका आग्रह और प्रशासन में अनुशासन को सर्वोपरि महत्त्व देने की आदत, इन सभी गुणों के कारण वे मेरे राजनीतिक जीवन की ध्रुव-प्रेरणा बनकर प्रतिष्ठित हुए हैं।

चौधरी साहब के व्यक्तित्व का दायरा जितना विशाल है उनका हृदय भी उतना ही विशाल है। स्वामी दयानन्द सरस्वती उनके माध्यम एवं गाँधी जी उनके आदर्श हैं, तो सरदार वल्लभ भाई पटेल उनके अनुकरणीय हैं। उनके व्यक्तित्व में गाँधीवाद की उच्चतम उपलब्धियों के दर्शन होते हैं। गाँधीजी सूत्र हैं, तो चौधरी साहब भाष्य हैं। गाँधी जी सिद्धान्त हैं तो चौधरी साहब कर्म हैं। गांधी जी ने 'यंग इंडिया' के १६ फरवरी सन् १९२१ के अंक में लिखा था—"किसानों को अपने खाली समय के सदुपयोग के लिये एक खेतिहर देश में पूरक उद्योगों की आवश्यकता होती है।"

चौधरी साहब इसी सिद्धांत को मूर्तरूप दे रहे हैं। जनता को तथा जनता की अपने आपको अपने प्रयत्नों से जनतान्त्रिक ढंग से ऊपर उठने की क्षमता को ही हर काम, हर कदम का केन्द्रीय बिन्दु बनाये रखने का प्रयास, कृषि को प्राथमिकता, दस्तकारी, लघुउद्योगों को प्रमुखता, आत्मनिर्भरता व विकेन्द्रीकरण पर बल, अर्थव्यवस्था चलाने में राज्यतन्त्र की न्यूनतम भूमिका, ग्राम्य संस्कृति पर नागरी सभ्यता का कुप्रभाव रोकना आदि कार्य करने में चौधरी साहब संलग्न है।

चौधरी साहब की संगठनात्मक क्षमता और प्रशासनिक कुशलता देखकर सरदार पटेल का सहज स्मरण हो आता है, वे हृदय से गरीबी, भ्रष्टाचार, झूठ और मक्कारी से नफरत करते हैं और सिद्धान्तों पर अडिग रहते हैं। सिद्धान्त उनके लिए सर्वोपरि है, गृहमन्त्री की कुर्सी नहीं। उनके कर्मठ नेतृत्व में देश का भविष्य सदैव सुरक्षित है। विशेष रूप से उस उपेक्षित, पीड़ित और पद दलित वर्ग का, जिसके सर्वाङ्गीण विकास में ही भारत का विकास निहित है।

●

मैं अपनी मातृभूमि के लिए तथा उसके दुःखों
के विमोचन के लिए हर तरह के कष्ट सहने
को तत्पर हूँ—वे कष्ट चाहे जिस तरफ से आवें;
चाहे जिस वक्त आवें; मुझे चिन्ता नहीं है।

—अथर्ववेद

विदाय

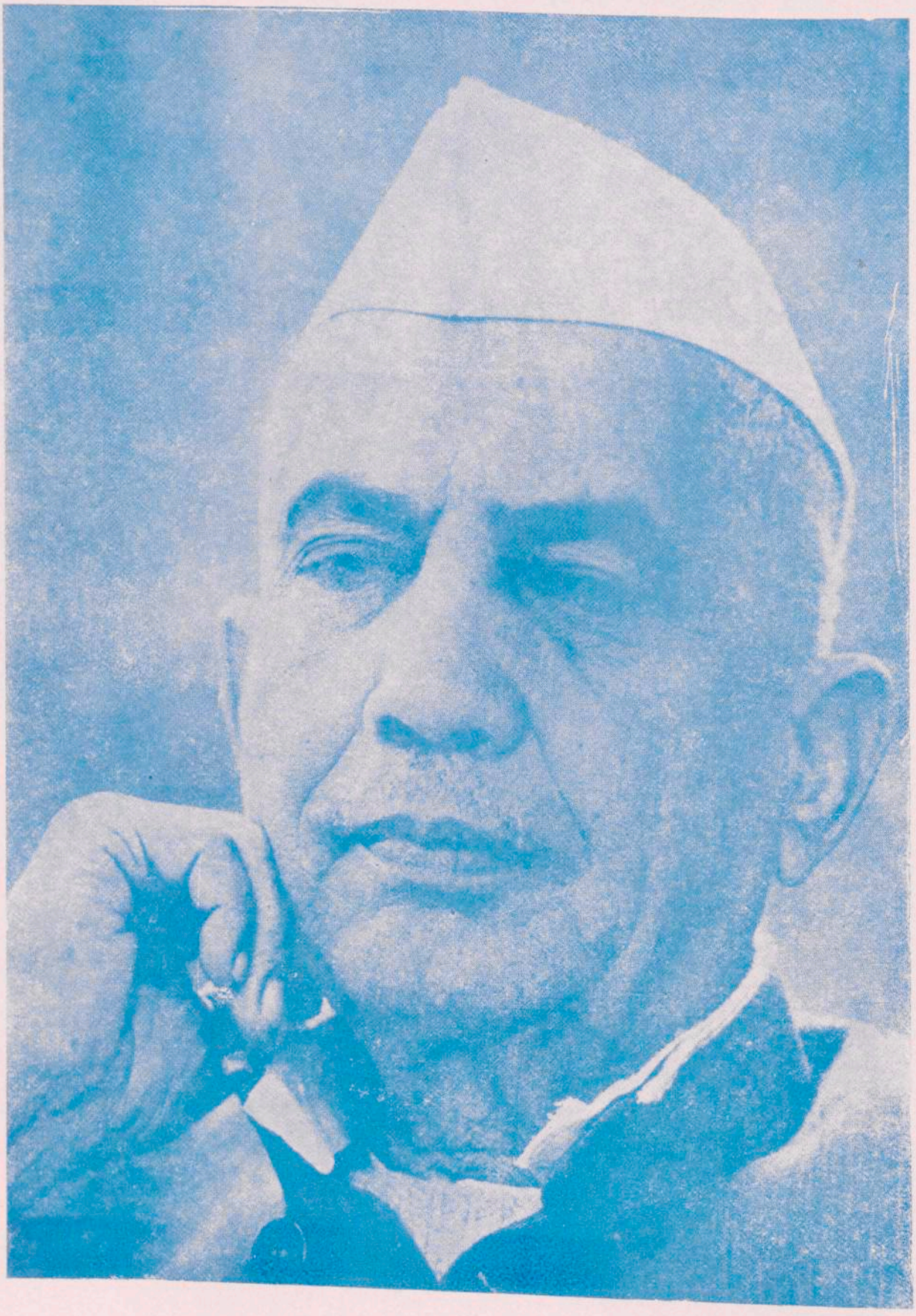

माननीय और मननीय

□ जैनेन्द्र कुमार

चौधरी चरणसिंह जी से मेरा सीधा परिचय नहीं है। इसलिये व्यक्तिगत तो कुछ लिख नहीं सकता, किन्तु मैं अपने लिए इन्हें माननीय से आगे मननीय भी मानता हूँ। गृह-मन्त्री की माननीयता तो औपचारिक होगी और वह कुर्सी की अधिक हो जायेगी। माननीय के साथ जब मैं मननीय कहता हूँ तो इसलिए जब उनमें अपना विचार रखने और कहने का साहस है तब उस विचार में कितनी दृढ़ता है कि जो जिद ही नहीं हो सकती, वह विचार सुचिन्तित है और अपने नीचे पक्की बुनियाद रखता है।

राजनीति और राजनेता अधिकाँश समय को देखकर अपना अभिप्राय बनाते हैं, यानी समयानुकूलता उन्हें अपने लिए आवश्यक होती है। अवसर को जो नहीं पहचानता वह राजनीति में ऊँचाई पर कैसे पहुँच सकेगा ? चरणसिंह जी भी उस विषय में कम दूरदर्शी हैं ऐसा नहीं कहा जा सकेगा, लेकिन अपनी बात पर दृढ़ रहते हुए तत्काल के लिए अप्रिय बने रहने और उस अप्रियता को सह जाने की क्षमता उनमें है। यह सृजनशील राजनेता का लक्षण कहा जा सकता है।

पश्चिम में जिसे विकास मिला, उस अंक वैज्ञानिक अर्थ-शास्त्री से चौधरी साहब आतंकित नहीं हैं, न वहाँ की वैभव-शाली सभ्यता से विशेष प्रभावित हैं। आज के राजनीतिक क्षेत्र में बहुत कम लोग होंगे जो उस छाया से मुक्त हों। वे उस चिन्तनधारा के सहारे ऊपर अधर में उठ जाते हैं और अपनी धरती से टूट जाते हैं। चौधरी साहब की यह विशेषता कही जायेगी कि आज पद पर वे कितने भी ऊँचे पहुँचे हों, धरती से उनका नाता नहीं टूटा और नकली शहरियत उन पर नहीं छा सकी है। किन्हीं बौद्धिक बारीकियों में उलझ-बहक कर जीवन की मोटी बातों पर से उनका ध्यान हट नहीं गया है और उस प्रकार के आदर्शवाद की भटकन से वह बचे रह गये हैं।

जवाहरलाल जी अपने समय में एक अच्छे नेता थे। उनके काल में और उनके बाद लोग गाँधी-नेहरू की दृष्टियों में समानता और समन्वय ही देखते आए। स्वयं गाँधी जी के लिए अन्त की ओर यह सम्भव नहीं हो सका था। यहाँ तक कि नेहरू ने जब भारत का राज्य संभाला तब गाँधी आशीर्वाद तक देने के लिए आस-पास कहीं न थे। नेहरू गणित के सीधे तर्क से अपने निष्कर्ष तक पहुँच जाते थे। पर मनुष्य तो गणित का त्रिभुज है नहीं, सीधी त्रैराशिक उस पर चल नहीं पाती। उन्होंने माना कि यंत्र से मनुष्य की उत्पादन शक्ति बढ़ती है, इसलिए मशीनी-उत्पादन पर राष्ट्रनीति का बल होना चाहिए। मशीन बनाने के लिए बड़ी मशीन चाहिए तो बड़े उद्योगों को पहले जमाओ। इस तरह एक प्रकार का भीमाकारवाद देश में चल निकला; किन्तु यंत्र जब मनुष्य की शक्ति को बढ़ाने के लिए होता है, तब यंत्रवाद इस मनुष्य की शक्ति को खा भी जा सकता है। देश में चलने वाले भीमोद्योगों को लाने-बिठाने के मोह का परिणाम मानव-क्षमता के ह्रास में फलित होगा और हो रहा है, यह नेहरू के जीवन-काल में ही यदि किसी राज-नीतिक नेता ने पहिचाना तो श्री चरण सिंह ने। उन्होंने खुलकर चेतावनी दी और उसका विरोध किया।

भारत देश जनाकीर्ण देश है। पहिली माँग है कि उस तमाम आबादी की शक्ति का उपयोग हो। वह कुण्ठित होकर खट्टी न बने और प्रकार-प्रकार के संघर्षों और समस्याओं को जन्म न दे, प्रत्युत वह बनाने-रुक जाने में न केवल शिक्षण को बल्कि तमाम समाज-व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था को इस दिशा में मोड़ना होगा। उद्योग कृषि पर हावी होने दिए जाएंगे तो परिणाम होगा कि बेहाली और भुखमरी बढ़ेगी और साथ ही साथ बाजार तरह-तरह के सामानों से पट जाएगा। जिन्दगी एक तरफ से बेहाल होती जाएगी और दूसरी तरफ आलीशान 'फाइव स्टार' होटल खड़े होंगे। इस दिशा में भारत का भविष्य नहीं है। उस तरफ देश को बढ़ाए लिए जाने का आशय उसे एक नई गुलामी में डाल देना होगा। अगर गाँधी के नेतृत्व में भारत देश में दासता से मुक्ति मिल पाई है, तो वह मुक्ति सार्थक तभी होगी, जब भारत अपनी आत्मा और प्रतिभा के अनुकूल अपना विकास करेगा और पाश्चात्य सभ्यता के समक्ष एक दूसरी कल्पना और रचना का नमूना प्रस्तुत कर सकेगा।

स्पष्ट है कि पश्चिम के पास धन अधिक है, यंत्र अधिक हैं, माल-टाल अधिक है, किन्तु धन की अधिकता उधर है, तो जन की अतिशयता इधर पूर्व में है। अगर पूर्व जन में से ही धन का उत्पादन नहीं कर सकता है, वरन् धन का आयात पश्चिमोत्तर देशों से करने को विवश है, तो जन, धन के नीचे और अधीन ही बना रह जाएगा। यह प्रकृति के विरुद्ध बात होगी।

चौधरी साहब ने यह पहिचाना और नेहरू-नीति पर चलने वाले और उसके तर्कान्त पर पहुँच जाने वाले इन्दिरा-राज्य के गिरने पर जनता सरकार के हाथ बागडोर आई, तो उन्होंने देश की अर्थनीति के लिए निर्देशक सिद्धांत घोषित किया। उन्होंने कहा कि देश की आवश्यकता की चीजें लघु और कुटीर उद्योगों से पैदा की जायें और बड़ी मशीनों से पैदा हुआ माल सिर्फ निर्यात के लिए हो। कृषि को प्रधानता मिले और यंत्रोद्योग उस पर भारी न हो।

मैं मानता हूं कि भारतीय जनतंत्र के लिए यही दृष्टि उपयोगी और सार्थक हो सकती है। विकसित माने जाने वाले देशों की समृद्धि उनके आयात पर निर्भर है। अगर वहाँ के माल के लिए मण्डी बने देश स्वावलम्बी बन जाते हैं, तो सम्पन्न देशों की समृद्धि और सम्पन्नता एकदम ढह जाती है। दूसरे शब्दों में वह सम्पन्नता अन्याय, अविकसित और विकासशील देशों की विपन्नता पर ठहरी हुई है। असल में, वह अर्थनीति और अर्थदृष्टि ही गहरी और बुनियादी नहीं है, जो मानव के शोषण के आधार पर समृद्ध बन जाने की कल्पना करती है। उत्पादन और वितरण की प्रक्रिया में भी मानवीय नैतिक विचार का दखल आगे-पीछे दाखिल हुए बिना नहीं रहेगा। गाँधी जी का इन्हीं नैतिक मूल्यों पर आग्रह था; उन मूल्यों की बात तो आज सब ओर से सुनाई देती है और जनता सरकार के प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई का उनके पालन पर आग्रह भी पूरा है, पर अर्थनीति और व्यापार-व्यवसाय में उन मूल्यों को घटित और फलित करने के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि चौधरी साहब अधिक सावधान और तत्पर हैं।

मैंने उन्हें दूर से देखा है। मुझे प्रतीत हुआ है कि देहाती रहते-दीखने में उन्हें तनिक भी उद्यम नहीं करना पड़ता है। अनेक नेताओं को सादा दीखने में सचेष्टता की आवश्यकता होती है। सादगी चरणसिंह जी की प्रकृति में ही सिक्त है। गृहमन्त्री के रूप में ऊँचे से ऊँचे अफसर से उन्हें निबटना होता होगा। अफसरों के गर्व और दर्प का सामना किसको नहीं करना पड़ता है? यह सीधा-सादा सहज देहाती व्यक्ति उन गर्वीले अफसरों पर किस विधि से शासन कर पाता होगा, यह प्रश्न और तर्क का विषय भले हो सकता हो, पर यह प्रमाणित है कि वह शासन अभंग और अखंड है।

सादगी के साथ चौधरी साहब के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी ही अतर्क्य गरिमा होनी चाहिए। सरलता और यह अनुल्लंघनीय गरिमा का एक व्यक्तित्व में समावेश कैसे हो जाता है यह मुझ जैसे कथा लेखक के लिए किंचित विस्मय और रहस्य का विषय है। इसलिये मैं जबकि राजनीततिक सफलता के के लिए उन्हें माननीय मान सकता हूँ, तब व्यक्तित्व की जटिलता और गहनता के लिये मैं उन्हें लेखक के नाते मननीय मानने को अपने को विवश पाता हूँ।

ठोस आदमी

□ पं० परमानन्द

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के जीवित इतिहास के स्वर्णिम अध्याय, गदर पार्टी के नेता पण्डित परमानन्द, जिनके जीवन से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सबसे संघर्षशील महत्त्वपूर्ण इतिहास जुड़ा है या यों कहिये कि जिनका जीवन स्वातंत्र्य संघर्ष का साक्षी ही नहीं स्वयं वह जाज्वल्यमान ज्योति पुञ्ज हैं जिसने भारत माँ के पाँव में पड़ी बेड़ियाँ काटने में स्वयं अस्त्र का काम किया है। उनके दर्शन का अवसर मिला। अवसर का लाभ उठा कर मानव गत जिज्ञासा ने कई प्रश्न किये और कई उत्तर पाये। महात्मा गाँधी के कई सशक्त चित्र उनकी आंखों में दर्शन किए, उनकी वाणी से छलकता अनुभव अन त आस्था के साथ लिपिबद्ध उद्धृत है।

●

इसमें तो कोई भी दो राय नहीं हो सकती कि भारत की स्वतन्त्रता को लाने में ज्यादा श्रेय महात्मा गाँधी को है। महात्मा गाँधी को साधारण आदमी समझ नहीं सकते। मैं तो उनके साथ तीन साल जेल में रहा हूँ और मैं समझता हूँ कि जेल जीवन में जितना मनुष्य एक-दूसरे को समझ पाता है, वह बाहर नहीं समझ पाता। गाँधी जी किसी पार्टी के नहीं थे, इसीलिए वह महान थे।

बाद में सरदार पटेल के साथ भी रहा। सरदार पटेल का व्यक्तित्व बहुत महान था। मैं उनके साथ दो साल जेल में रहा। उसके पीछे, यह जो २०–२५ वर्ष गए, इसमें एक पार्टी वालों ने दूसरी पार्टी को कभी प्रोपेगैण्डा करके गिराने की कोशिश की, कभी किसी को चढ़ाने की कोशिश की। लेकिन गिराने से और चढ़ाने से तो काम नहीं बनता। मुझे सबसे बड़ा दुःख तो यही है कि जितनी भी संसार के अन्दर राजनीतिक पार्टियाँ हैं, चाहे कोई भी पार्टी हो, उसमें मौखिक प्रोपेगैण्डा का बाहुल्य है, चरित्र की तरफ कोई ध्यान नहीं देता। और मेरा ऐसा ख्याल है कि मनुष्य अगर चरित्रवान हो, महान पुरुष हो, जैसे गाँधी जी थे या सावरकर थे, तो उसको प्रोपेगैण्डा की जरूरत नहीं पड़ती। एक-दूसरे की आलोचना मूर्ख लोग ही करते हैं, बुद्धिमान लोग आलोचना नहीं करते। जो भगवान की महानता को प्राप्त कर लेगा, वह धरती माता की महानता को सहज ही प्राप्त कर लेगा। उसका तो धरती के समान चरित्र होना चाहिए। धरती के समान धीरज होना चाहिए। सबको क्षमा, सब पर दया करने की क्षमता होनी चाहिए। आलोचना तो हम जैसे ही मूर्ख लोग करते हैं। कोई किसी की आलोचना करता है, तो मुझे बड़ा दुःख होता है कि यह उसी श्रेणी का आदमी है, जिसकी आलोचना कर रहा है।

इंजीनियर जब महल बनाने को तैयार होता है, तो वह छोटे-छोटे कार्यकर्त्ताओं को साथ लेकर ही काम करता है। उनकी श्रेणी दूसरी होती है, इंजीनियर की श्रेणी, दूसरी दोनों श्रेणियों के समन्वय से ही निर्माण होता है। जो इंजीनियर है, आर्कीटेक्ट है, वह महलों को रचने वाला है, उसे छोटी-छोटी बातों में, यह ईंट खराब है, यह सीमेंट खराब है, यह लकड़ी टेढ़ी है, इसमें नहीं पड़ना चाहिए। अगर इंजीनियर इसमें पड़ जायेगा तो वह अपनी महानता खो बैठेगा। उसे तो उपलब्ध वस्तुओं की कमियों के बावजूद सुन्दर निर्माण की कला प्रस्तुत करनी चाहिये।

एक वक्त गाँधी जी के पास हिंसा और अहिंसा के बारे

में बात कर रहा था । वह कहने लगे परमानन्द जी, "बताइये गुस्सा कब आता है ?" मैंने कहा कि "आप ही बताइये कि गुस्सा कब आता है ?" तो उन्होंने कहा कि "गुस्सा तभी आता है जब मनुष्य का मनुष्यत्व खो जाता है, जब उसकी बुद्धि विवेकहीन हो जाती है।" गुस्से से बुद्धि फेल हो जाने के कारण वह गुस्से से या तो जूता उठा लेता है या लट्ठ उठा लेता है। कहते हैं बुद्धिमान आदमी को गुस्सा नहीं आता। जिम्मेदार व्यक्ति को गुस्सा नहीं करना चाहिए। आपको देखना है कि ऐसा न हो कि बुद्धि का दुरुपयोग हो।

प्रश्न—इस समय जो व्यक्ति हैं हमारे सामने राजनीति में उनमें कौन ऐसी विभूतियाँ हैं, जो हमारे देश को उन्नति की ओर अग्रसर कर सकती हैं ?

उत्तर—ईमानदारी की बात है, मैं तो न प्रोपेगैण्डा में विश्वास करता हूं और न किसी की जम्पिंग में; अगर कोई ठोस आदमी काम करने के योग्य है तो वह चौधरी चरण सिंह हैं। उसके ऊपर मैं श्रद्धा करता हूँ, प्यार करता हूँ। और तो कोई मुझे नजर नहीं आता। सच्ची बात बताऊँ। चौधरी चरणसिंह है, वह घिरा हुआ है। घिरा तो रहता है, हरेक जो है कोई भी महापुरुष है वह घिर ही जाता है। तो चौधरी साहब को भी लोग घेरे रहते हैं। उसका चरित्र बहुत 'स्पाटलेस' है। आदमी बहुत सुन्दर है; बिल्कुल सिम्पल। मैं जब जाता हूँ, मिलता हूँ। वही धोती पहने हुए, एक कमीज पहने हुए काम करता रहता है। उसकी 'सिम्पलीसिटी' जो है, 'करेक्टर' जो है, उससे पता लगता है वह कितना अच्छा इन्सान है। हमारे लाला हरदयाल कहा करते थे कि 'ग्रेटनेस' देखना हो तो 'ग्रेटनेस' आम के पेड़ से पूछो, आँवले के पेड़ से पूछो कि जब तुम्हारे पास फल नहीं लगे थे तो बहुत उछलकूद मचा रहे थे और जब तुम्हारे अन्दर फल लदना शुरू हुए तो झुक गए; जमीन के पास आ गए। 'ग्रेटनेस' का नम्रता से बहुत गहरा सम्बन्ध है। नम्रता ही 'सिम्बल' है 'ग्रेटनेस' का। चौधरी साहब में नम्रता है, लेकिन अपने विचारों और प्रशासन के मामले में मजबूती है। इसी वजह से चौधरी साहब मुझे पसन्द हैं। चन्द्रशेखर से भी मुझे प्यार है, अच्छा लड़का है, देश के वास्ते और तो कोई मुझे नजर आता नहीं, जो आज के हाल में देश को चला सके और आगे बढ़ा सके।

●

सगोपस्थानिको बाह्यं प्रदेष्टा चौरमार्गणम्।
कुर्यान्नागरिकश्चान्तर्दुर्गे निर्दिष्टहेतुभिः ॥

—चाणक्य

प्रदेष्टा नामक राज्याधिकारी गोप तथा स्थानिक अधिकारियों को साथ लेकर बाहर के चोरों की खोज लगाए। नगर या दुर्गों में नागरिक नामक अध्यक्ष चोरों का पता लगाए।

●

स्पष्ट मत

□ कर्मवीर डा० सुन्दरलाल

मैंने चौधरी चरणसिंह का अर्थनीति सम्बन्धी लेख पढ़ा था और प्रसंशा भी की। मेरी दृष्टि से उनके विचार भारत की अर्थनीति को सफल और सशक्त बनाने में सक्षम हैं। पर उस लेख के बाद ऐसा कुछ सामने नहीं आया कि नीति का कार्यान्वयन प्रारम्भ हो गया है। लगता है उनके अपने ही साथी इस ओर अधिक सचेष्ट नहीं हैं। चरणसिंह भ्रष्टाचार उन्मूलन में लग गए हैं, शाह कमीशन और दूसरे कमीशनों के काम को देख रहे हैं और गलियों में बसने वाली जनता कह रही है कि नीति कागज में ही रह जायेगी।

इस समय जनता का एक-एक आदमी जनता सरकार की प्रशंसा करता, अगर नयी सरकार के आने के बाद अनाजों के दाम गिरते जैसा कि रूस, चीन, वियतनाम, क्यूबा और उत्तरी कोरिया में हुआ था।

अगर अर्थनीति का विषय हम पूरी तरह चरणसिंह को सौंप दें तो जनता पार्टी अमर हो जायगी, चौधरी अमर हो जायेंगे। वे ही इस काम को कर सकते हैं। फिर वे और कोई काम न करें, क्योंकि यह काम बहुत बड़ा है और बड़े महत्व का है। मैं पूरी तरह से उनके काम के लिए हूँ। तब तो भारत के गाँव और शहर चमक उठेंगे।

'भारत में अंग्रेजो राज' पुस्तक के लेखक कर्मवीर सुन्दरलाल उन महान व्यक्तियों में हैं जिन्होंने भारतीय इतिहास को उसका वास्तविक स्वरूप प्रदान किया और स्वतंत्रता सेनानियों की अनन्य देश भक्ति एवं भव्य गौरव-गाथाओं को लिपिबद्ध कर सत्य को डूबने से बचा लिया। अंग्रेज इतिहासकार तथ्यों को तोड़-मरोड़कर भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलन को 'गदर' का नाम देकर देश प्रेमियों की तस्वीर 'देशद्रोहियों' के रूप में परिवर्तित करना चाहते थे। आपकी सशक्त लेखनी ने विदेशी कुशासन का असली स्वरूप प्रस्तुत किया। शासन कम्पित हो उठा और आपकी पुस्तक जब्त कर ली गई चन्द बरदाई की भांति देश में आपकी कीर्ति सदा अक्षुण्ण रहेगी।

●

मैं महात्मा गाँधी का सोलह आने भक्त हूँ। गाँधी और कार्लमार्क्स दोनों ही युग-दृष्टा थे। दुनिया उधर ही चलेगी एक दिन। मैं तो उस दिन की कामना करता हूँ, जब स्वतंत्र चीन, स्वतन्त्र भारत और रूस आपस में मिलकर मानवता की बेहतरी और खुशहाली के लिए काम करेंगे। गाँधी के रास्ते पर तो दुनिया को चलना ही पड़ेगा चाहे हँसकर चले या रोकर।

चरणसिंह की विचारधारा गाँधीवादी है; उनकी आर्थिक नीति में भी वे मौलिक बातें हैं, जिनका प्रतिपादन गाँधी जी ने किया था। मैं फिर बार-बार दोहराता हूँ कि देश की अर्थ-व्यवस्था का भार चरणसिंह पर छोड़ दो।

●

अभिनव गाँधी

□ शान्ता कुमार
मुख्य मंत्री, हिमाँचल प्रदेश

चौधरी चरणसिंह भारत के भूमि-सुधारकों में गण्यमान हैं। किसान परिवार से सम्बन्धित होने के कारण उन्हें भारत की मिट्टी की पूरी तरह पहिचान है। यही नहीं, वे इस मिट्टी में श्रम द्वारा काम करने वाले कृषकों की कठिनाइयों से भी भली प्रकार परिचित हैं। ग्राम्य अर्थ-व्यवस्था उनसे छिपी नहीं। जितनी संलग्नता से उन्होंने कृषक-जीवन को उभारने का प्रयत्न किया है, वह भी सर्व-विदित है।

किसान के इस पुत्र ने जब वकालत पास की और गाजियाबाद तथा मेरठ में वकालत प्रारम्भ की तभी से उनके व्यक्तित्व की सुदृढ़ता तथा मनोबल की उच्चता का आभास हुआ और उन्होंने इसी कारण राजनीति में प्रवेश किया। उनमें व्यक्तित्व की गरिमा है। जब वे उत्तर प्रदेश में कृषि मन्त्री थे तब भी उन्होंने नागपुर के कांग्रेस अधिवेशन में कृषि-सुधार प्रस्ताव जिसमें सहकारी कृषि को महत्ता दी गई थी, का प्रखर विरोध किया था।

चौधरी महोदय गाँधी जी के पक्के अनुयायी हैं। उन्होंने गाँधी जी की आर्थिक नीतियों को ठीक रूप में समझा ही नहीं, अपितु उन्हें कार्यान्वित करने में भी वे सदा अग्रसर रहे हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि गाँधी जी के बताये हुए मार्ग पर चलकर ही देश को आर्थिक पिछड़ेपन से बचाया जा सकता है। उनका विचार है कि गाँधी जी के विचार आज भी उतने महत्वपूर्ण हैं, जितने वे ईसा के २००० वर्ष बाद में भी होंगे।

उनके विचार में पिछली आर्थिक नीतियों की विफलता के दो कारण हैं। पहला यह कि कृषि तथा उद्योग पर असंतुलित धनराशि का प्रावधान और दूसरे बड़ी-बड़ी मशीनों पर अधिक ध्यान। इसके समाधान के लिए उन्होंने दो आमूल परिवर्तनों का सुझाव दिया है। ये आमूल परिवर्तन हैं—धनराशि के प्रावधान में कृषि को अधिक प्राथमिकता तथा बड़ी मशीनों पर नियन्त्रण। उनका विचार सही है कि भारत की आर्थिक रूपरेखा ग्राम्य-विकास तथा उन उद्योगों पर निहित हो, जिनका कच्चा माल स्वदेश में ही उपलब्ध हो। इसी नीति द्वारा भारत स्वावलम्बी अर्थ-व्यवस्था की ओर अग्रसर हो सकता है।

कृषि-क्षेत्र की उपेक्षा करना एक 'मौलिक पाप' है। इसकी उपेक्षा से खुराक की कमी पैदा हुई है। खुराक की कमी को पूरा करने के लिए हमें ६ हजार करोड़ रुपये से कुछ अधिक व्यय करना पड़ा है। इसी कारण न तो हमारे उद्योग ही पनप सकें हैं और न ही कृषि-रहित व्यवसाय।

सन् १९५१ में ७२ प्रतिशत लोग कृषि में रोजगार पाते थे। १० प्रतिशत उद्योगों में और १८ प्रतिशत अन्य आर्थिक क्षेत्रों में। यह दुःख की बात है कि आज भी रोज़गार उसी अनुपात में उपलब्ध हैं।

गलत आर्थिक नीतियों के सन्दर्भ में उनका विचार है कि बड़े-बड़े उद्योगों द्वारा देश की आर्थिक बढ़ोत्तरी को धक्का लगा है। वास्तव में गाँधी जी के आर्थिक कार्य-

क्रमों से हटकर, देश का जो गलत दिशा निर्देश हुआ है, उससे बहुत सी कठिनाइयाँ सामने आई हैं। ठीक तो यह है कि देश की आर्थिक समृद्धि उसके अपने स्रोतों तथा मानव शक्ति के उचित प्रयोग से ही सम्भव है। इसीलिये श्री चरणसिंह ने अपनी नई आर्थिक नीति की व्याख्या करते हुए कहा है, कि सारा अर्थतन्त्र कृषि, व्यवसाय प्रधान तथा विकेन्द्रित उत्पादन पर केन्द्रित होना चाहिए, जिससे गाँधी जी के वह शब्द कि 'जनसमूह द्वारा जनसमूह के लिए ही उत्पादन होना चाहिए' सार्थक हों।

नई आर्थिक नीति की विवेचना करते हुए चौधरी चरणसिंह ने देश को गाँधीवादी आर्थिक कार्यक्रम से जोड़कर एक नया मोड़ दिया है। उनका विचार है कि देश की समृद्धि को लोहे, वाहनों तथा दूरदर्शन के उत्पादन से नहीं आँका जा सकता, परन्तु आवश्यक वस्तुओं जैसे अन्न, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि की बढ़ोत्तरी से ही आँका जा सकता है।

उद्योग अर्थतन्त्र को भी नई रूपरेखा देना हमारी आर्थिक विषमताओं पर काबू पाने का एक महत्वपूर्ण पग है। जिस देश में धन का अभाव हो और मानवशक्ति अधिक हो, उसमें उद्योग-तन्त्र को उसी रूप में ढालना है। धन-प्रधान उद्योगों से हटकर श्रम प्रधान उद्योगों को बढ़ावा देने से ही बहुत हाथों को काम मिल सकता है, जिससे कि मानव शक्ति का पूर्णरूप से प्रयोग भी हो सके तथा उनके जीवन-स्तर को भी ऊँचा उठाया जा सके। बड़े-बड़े उद्योगों का भी स्थान है, परन्तु केवल उन्हीं पर अर्थव्यवस्था प्रगति नहीं कर सकती। रोज़गार प्रदान करने की दिशा में भी चौधरी साहब के विचार सराहनीय है। उनके अनुसार कृषि-क्षेत्र, ग्राम्य-कार्यक्रम तथा ग्राम्य-उद्योग बढ़ती हुई बेरोजगारी को रोकने में समर्थ हैं।

आज से पूर्व, यह दुर्भाग्य रहा है कि देश की आर्थिक योजनायें विदेशी तकनीकी-ज्ञान पर ढाली गईं, जिसका फल यह हुआ कि हमारे सामाजिक जीवन के परिप्रेक्ष्य में वे ठीक नहीं उतरीं। यह इसलिये भी हुआ कि गाँधीवादी आर्थिक कार्यक्रमों से हम दूर हट गये। हमने उस भवन का निर्माण किया है जिसकी नींव खोखली है। यदि हम अधिक लोगों को साथ लेकर उनसे उत्पादन बढ़ाने की दिशा में कार्य करते तो हमारी अर्थव्यवस्था का रूप ही कुछ और होता।

चौधरी चरणसिंह ने जिस वास्तविकता से देश के लिए एक नई आर्थिक-पद्धति का आह्वान किया है, वह सभी देशवासियों की भलाई के लिए है। राष्ट्र की सर्वाङ्गीण प्रगति इसमें निहित है। यह उनका ही क्षेत्र है कि अपने उत्कृष्ट अनुभव द्वारा उन्होंने सच्चे गाँधीवादी के रूप में देश की समस्याओं को मूलरूप में पहचाना है और इनके समाधान हेतु क्रियात्मक सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

नई आर्थिक नीति के सन्दर्भ में चौधरी महोदय के सुझाव देश को नई दिशा प्रदान करते हैं। भावी इतिहास में शान्तिपूर्ण व्यवस्थित तथा समीचीन आर्थिक-क्रान्ति के अग्रदूत के रूप में उनका स्मरण किया जायेगा।

जनता पार्टी के एक वरिष्ठ नेता के रूप में, भारत के गृहमन्त्री होने के नाते उन्होंने पार्टी के घोषणापत्र के अनुसार ही नई आर्थिक नीति का संपादन किया है। उनका मत ठीक है कि 'मनुष्य केवल रोटी खाकर ही नहीं जीता, परन्तु स्वतन्त्रता तथा समानता भी उसके जीने के लिए उतने ही आवश्यक हैं जितनी कि रोटी।' जनता पार्टी उस समाज की रचना में विश्वास रखती है, जिसमें स्वचालित-रोज़गार प्राप्त हो। उन्होंने नई आर्थिक नीति द्वारा विकास का नया विकल्प प्रस्तुत किया है जो गाँधी जी के बताये हुए मार्ग पर निर्धारित है।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे चिरायु हों और देश को नये विकास के मार्ग पर ले जाने में तथा गाँधी जी के सपनों को साकार कर उनके आर्थिक-दर्शन की विजय-पताका विश्व में फहराने में सफल हों।

●

समर्थ राजनीतिक-चिन्तक

□ डा० सोमनाथ शुक्ल

बीसवीं शती के राजनीतिक चिन्तन में दो राजनीतिज्ञ विशेष रूप से जिज्ञासा के विषय बने हैं, प्रथम लोकनायक जयप्रकाश और दूसरे चौधरी चरणसिंह। जयप्रकाशनारायण के राजनीतिक चिन्तन में जितनी संश्लिष्टता है, उतना ही सारल्य चौधरी चरणसिंह के चिन्तन में है। संश्लिष्टता के कारण जयप्रकाश जी के चिन्तन में असंगति का आरोप लगता है और चरणसिंह के चिन्तन में सारल्य होने से उनके चिन्तक रूप की अस्वीकृति प्रकट की गई है। जयप्रकाश जी के चिन्तन में नागर कौशल है, और चरणसिंह के चिन्तन में ग्रामीण गरिमा है। अभिप्राय दो राजनीतिज्ञों की तुलना का नहीं है। केवल चौधरी चरणसिंह के राजनीतिक चिन्तन की उत्कृष्टता का निरूपण करना है। चौधरी चरणसिंह के राजनीतिक चिन्तन को समझने में किसी कठिनाई का बोध नहीं होता। वे अपने में नितान्त स्पष्ट हैं। सम्भवतः वे किसी कूटनीतिक बुद्धिमत्ता पर विश्वास नहीं करते, और महात्मा गाँधी की तरह सत्यनिष्ठा पर आधारित चिन्तन और चरित्र पर गहरा विश्वास करते हैं।

सक्रियतावादी चिन्तन

भारत देश की यह परम्परा और प्रतिष्ठा रही है, कि शास्त्रवादी और सक्रियतावादी दोनों पृथक्-पृथक् व्यक्तित्व के नहीं माने गये हैं। सिद्धान्त का निरूपण दूसरे के लिए ही नहीं अपने लिए भी होता रहा है। इस प्रकार इस देश के विचारकों ने कथनी और करणी के सामञ्जस्य को आवश्यक माना है। सिद्धान्त और व्यवहार में समन्वय एक सहज स्थिति है। चौधरी चरणसिंह निश्चित रूप से जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हैं, वे नितान्त व्यावहारिक हैं। उनके चिन्तन में शास्त्रीय वाग्विलासिता नहीं है। स्वतः जीवन से और सक्रियता से प्रकट होने वाला चिन्तन है। परम्परा निस्सृत-तत्त्वज्ञान की भूमिका में परिस्थिति-जन्य तथ्यों की सहज मीमांसा उन्हें शास्त्रीय व्यक्तियों की अपेक्षा सामान्य जन के अधिक निकट ला देती है। चौधरी चरण-सिंह का जो कुछ भी राजनीतिक चिन्तन है, वह उनके जीवन में समस्याओं, संघर्षों, समाधानों तथा सफलताओं का प्रतिफल है।

इतिहास का सन्दर्भ

चौधरी चरणसिंह का राजनीतिक इतिहास इस देश की बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध की गतिविधियों को भी निष्कपट रूप में अभिव्यक्त करने वाला है। भारतीय स्वातंत्र्य के पूर्व कांग्रेस के मंच से राष्ट्रीय जीवन में योगदान उनकी उस मानसिकता को प्रकट करने वाला है, जिसमें राष्ट्रीय पराधीनता के प्रति एक अदम्य विद्रोह है। चौधरी चरण सिंह स्वातन्त्र्य संग्राम की प्रथम पंक्ति में भले ही न रहे हों, किन्तु स्वतन्त्रता का इतिहास यह प्रकट करता है कि एक समर्थ चिनगारी शोला बनने की दिशा में अवश्य थी। एक स्फुलिंग अग्निपुञ्ज बनने जा रहा था। स्वतन्त्रता के संघर्ष में किसी भी भूमिका का निर्वाह परवर्ती पीढ़ियों के लिए पावन और प्रेरक प्रसंग है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि अपने यौवन काल में ही अहिंसक प्रतिकार की सौम्य प्रवृत्ति

को स्वीकार किया था। सत्य और अहिंसा के महान आग्रही महात्मा गाँधी के नेतृत्व को स्वीकार करने वाले तत्कालीन युवक अपने संयम और सब्र के लिए ऐतिहासिक प्रशस्ति के पात्र हैं। चौधरी चरणसिंह का राजनीतिक चिन्तन और चरित्र स्वातंत्र्य और स्वराज्य प्राप्ति से प्रारम्भ होता है।

सामन्तवाद की समाप्ति

चौधरी चरणसिंह ग्रामीण क्षेत्र से उभर कर आने वाले राजनीतिज्ञ हैं, जिन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में सामन्तवाद को समाप्त करने का स्पष्ट विचार और विवेक दिया था। जमींदारी उन्मूलन में सामन्तशाही को धराशायी करने का उद्देश्य था। स्वतन्त्रता के पश्चात् ही इस कार्य और विचार को चौधरी साहब ने वैज्ञानिक और व्यवस्थित ढंग से करने का प्रयत्न किया था। ग्रामीण क्षेत्रों में सामन्तवाद की समाप्ति आखिर हो गई। किन्तु बड़े किसानों के रूप में सामन्तशाही कानून से आँख मिचौनी कर जीवित रही है। इस दिशा में चौधरी चरणसिंह ने एक स्पष्ट चिन्तन और चरित्र दिया, कि बड़े खेतिहरों की सीमाबन्दी नितान्त आवश्यक है। जोतों की सीमा के सम्बन्ध में स्पष्ट अभिमत रहा है कि मध्यम आकार की खेती आर्थिक और सामाजिक सन्तुलन को स्थापित रख सकती है। सन् १९७७ में सत्ताधारी पक्ष के विचारार्थ आर्थिक प्रस्ताव में इस विचार-विवेक पर चौधरी साहब ने बल दिया है। साथ ही सामन्ती संस्कारों के उन्मूलन के लिए चौधरी साहब ने भूमि स्वामित्व की समाप्ति का विचार दिया है, जिससे जोतदार का राज्य से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाये। वस्तुतः चौधरी साहब एक ऐसी कार्षिक व्यवस्था के पक्षधर हैं, जिसमें सामन्तशाही वृत्तियाँ जो शासन, शोषण और स्वामित्व पर आधारित होती हैं, समाप्त हो जायें।

समाजवाद की व्याप्ति

चौधरी चरणसिंह का राजनीतिक चिन्तन महात्मा गाँधी के आदर्शों के अनुरूप है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि महात्मा गाँधी के आदर्शों में अधिकांश राजनीतिज्ञों ने अपने अनुकूल अंशों को ग्रहण किया है। किन्तु महात्मा गाँधी में जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नैतिकता की सुगन्धि है, उसे किसी वाद-विवाद से आवृत्त नहीं किया जा सकता। इस नैतिकता के कारण ही गाँधी-विचार चौधरी चरणसिंह के निकट प्रतीत होता है। स्वतन्त्रता का परवर्ती राजनीतिक इतिहास, समाजवादी संघर्ष और संरचना का अध्याय है। समाजवाद के प्रयत्नों और प्राप्य में चौधरी साहब की भूमिका कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसकी मीमांसा समाजवादी आन्दोलन की अक्षमता और सक्षमता दोनों को स्पष्ट रूप से विश्लेषित कर देती है। चौधरी साहब ने स्पष्ट रूप से गाँधी-विचार के परिवेश में समाजवाद को स्वीकार किया है। यहाँ यह जान लेना महत्त्वपूर्ण है कि गाँधी-विचार राज्य-समाजवाद के स्पष्ट रूप से विरोध में था।

महात्मा गाँधी ने बीसवीं शती में बढ़ते हुए राज्य वाद को मानवीय समाज के लिए दुर्भाग्यपूर्ण माना था। समाजवाद का अभिप्राय सरकारीकरण नहीं है। पूँजीवाद को राज्यवाद से अच्छा मानकर भी महात्मा गाँधी ने पूँजीवाद को कभी स्वीकार नहीं किया था। किन्तु पंडित नेहरू ने समाजवाद और पूँजीवाद के बीच मिश्रित अर्थव्यवस्था के रूप में समझौता किया था। वस्तुतः इस नीति में समाजवाद ने अपनी तेजस्विता खोई थी, जनता पार्टी की आर्थिक नीति की प्रस्तावना में चरणसिंह जी ने महात्मा गाँधी जी के इस विचार को स्वीकार किया है कि "समाजवाद के लिए आवश्यक योजना जो उच्च स्तर से बननी प्रारम्भ होती है आजादी के लिए हानिकारक है। क्योंकि इसमें लोगों के लिए अपने निर्णयों के पालन करने की अपेक्षा, आदेशों का पालन करना आवश्यक होता है। इसके अलावा कार्यपटुता नहीं रहती है। क्योंकि इससे लाखों व्यक्तियों के अपने-अपने विस्तृत ज्ञान का प्रयोग असम्भव हो जाता है। जबकि नीचे के स्तर से आरम्भ योजना जो गाँधी विचार की अर्थ व्यवस्था पर लागू होती है, सभी का कल्याण बढ़ाने में प्रत्येक के हितों का ध्यान रखती है और इस प्रकार यह वास्तविक प्रजातन्त्र के लिए उपयोगी है।" चौधरी साहब ने समाजवाद को तथ्यगत और तात्त्विक रूप में समझा है। उनके अनुसार समाजवाद को औपचारिक रूप में या सरकारी रूप में स्वीकार करने से देश का लाभ नहीं होने वाला है। देश की बेरोजगारी और गरीबी आदि को मिटाने के लिए अधिक यथार्थवादी नीतियों को स्वीकार करना होगा। महात्मा गाँधी के विचार इसमें प्रकाश स्तम्भ की तरह हैं।

वस्तुतः समाजवाद के शुद्ध और सात्विक रूप को या गाँधी-विचार की नीतिमत्ता को चरणसिंह जी ने अपनी स्वीकृति दी है। यदि समाजवादी विशेष्य से इसे समझा जाये तो यह ग्रामीण समाजवाद है। यह महत्त्वपूर्ण है कि जिस देश में सत्तर प्रतिशत से अधिक लोग ग्रामीण क्षेत्रों में और कृषि कार्य में संलग्न हों, उनकी उपेक्षा कर ऐसे उद्योगों की रचना, विकास और स्वामित्व की चिन्ता की जाये, जिनसे केवल कुछ ही लोगों का, विशेषकर नागर वर्ग का ही लाभ हो, विवेकपूर्ण नहीं है। यह ग्रामीण-समाजवाद उपेक्षित बहुमत के जीवन को सर्वतोमुखी सम्पन्नता की दिशा में ले जाने के लिए संकल्पित प्रतीत होता है। जनता पार्टी की आर्थिक प्रस्तावना में चौधरी साहब ने यह स्पष्ट किया है कि "जब तक यह देश आर्थिक विकास के मौजूदा ढाँचे के अनुसार चलता है, जिसमें वह केवल शहरी लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए या अपने उत्पादनों को बिल्कुल कम कीमतों पर नियत करने के लिए, भारी लागत पर आधुनिक पूँजी प्रधान उद्योगों की स्थापना करता रहेगा, तब तक न केवल बेरोज़गारी ही बढ़ती जायेगी और पूँजी चन्द लोगों के हाथों में इकट्ठी होती जायेगी, बल्कि इस बात का भी खतरा है कि यह देश धनवान राष्ट्रों के चंगुल में अधिकाधिक फँसता चला जायेगा।" आज के राज्य-समाजवाद से श्रमिकों का शोषण समाप्त हो सकता है, इसे चौधरी साहब विश्वासयोग्य नहीं मानते। वस्तुतः चौधरी साहब एक ऐसे समाजवाद की स्थापना करना चाहते हैं, जो नितान्त व्यावहारिक हो और देश के विशाल जन-समुदाय की आर्थिक समस्याओं का समाधान तथा संतुलित आर्थिक सम्बन्धों की स्थापना कर सके और उसके राजनीतिक अधिकारों को संरक्षण दे सके।

वामपंथ या दक्षिण पंथ

चरणसिंह जी के राजनीतिक चिन्तन और चरित्र से यह स्पष्ट है कि वे वामपंथी राजनीति के समर्थक हैं। यह विचार योग्य है कि बीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में वामपंथ और दक्षिणपंथ जैसे भेद कृत्रिम हो गये हैं। जिन्हें दक्षिणवादी समझा जाता है, वे भी सामान्य जनों की सुख सुविधाओं को अस्वीकार नहीं कर सकते। विज्ञान और प्राविधि ने यह सम्भव भी कर दिया है। वामपंथी शक्तियाँ घृणा को मूल्य बनाकर यदि चलने का अभिक्रम और पुरुषार्थ तत्कालीन परिस्थितियों में करें भी, तो उसकी आवश्यकता नहीं है। स्थूल रूप से यह कहा जा सकता है कि जो चिन्तन अभावग्रस्त और अन्यायग्रस्त वर्ग का पक्षधर है, वह वामपंथी है। यह वामपंथ की निष्कपट व्याख्या है। गांधी-विचार वस्तुतः अति-वामपंथी हैं। वामपंथ का हिंसा से या घृणा से सम्बन्ध जोड़ना अबुद्धिमत्ता है। वामपंथ उपेक्षित, प्रताड़ित, पद्दलित और पिछड़े वर्ग को उठाने का विचार है, विवेक है और व्यथा है। मानवीय करुणा से आपूरित वामपंथ मानवीय पद्धति से ही समाधान करना चाहेगा। यथावत स्थितिवादी यदि कोई दक्षिणवर्ग है, तो वह चौधरी चरण सिंह को स्वीकार नहीं है। यदि वामपंथ मानवीय आधारों पर सामाजिक विषमताओं का समाधान करना चाहता है, चरणसिंह जी उसे स्वीकार करते प्रतीत होते हैं।

यथार्थवादी चिन्तन

यथार्थवादी राजनीतिक चिन्तन के पक्षधर होने के कारण चरणसिंह जी विशेष ग्रहणीय हैं। मार्क्स और महात्मा गाँधी के विचारों में सत्ता के अन्तिम स्वरूप को लक्ष्य कर जो 'युतोपिया' है, उस दिशा में चरणसिंह जी ने चिन्ता नहीं की है, राज्यशक्ति के समाप्त होने की, या जनशक्ति के ऐसे विकास स्तर को स्पर्श करने की कल्पना, जहाँ राज्य समाप्त हो जाये, निश्चयपूर्वक आज 'युतोपिया' है। आज की राजनीति, राज्यशक्ति और जनशक्ति के संतुलित सामञ्जस्य की अपेक्षा करती है। चौधरी चरणसिंह ऐसी राजनीति के ही सूत्रधार हैं। महात्मा गाँधी पर विश्वास करने वाले आज के कुछ राजनीतिक विचारक, आज की राजनीति पर विश्वास नहीं करते, वे आने वाले कल की राजनीति का स्वप्न देखते हैं। ये स्वप्नदृष्टा स्वागत योग्य हो सकते हैं; किन्तु आज की यथार्थ राजनीति से जूझने का कौशल न प्रकट करना, पलायनवाद भी बन सकता है। ये प्रतीक्षावादी या पलायनवादी जिस 'युतोपिया' में रह रहे हैं, उससे उन्हें निकलना होगा और यथार्थ की चुनौती स्वीकार करनी होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि चरणसिंह जी ने चुनौती भरे यथार्थ को अपने चिन्तन और चरित्र में स्वीकार किया है। गाँधी-विचार में 'युतोपिया' से अधिक यथार्थ का महत्व है। केवल सत्ता में जाना ही यथार्थ नहीं। समसामयिक समस्याओं से जूझना भी यथार्थ है।